मसीह में नया जीवन

भाग 1

मसीही जीवन के मूल चरण

यह **मसीह में नया जीवन** का हिन्दी प्रकाशन है। इसका मूल प्रकाशन स्पेनिश भाषा में किया गया था, "नूवेवा वीडा एन खीष्टो"। इसका अभिप्राय आपको मसीही जीवन की ठोस बुनियाद देता है। जब आप हर पाठ के उत्तर देते हैं तो बाइबल के शब्द ब शब्द कॉपी ना करें। अपने ही शब्दों में उत्तर देने का प्रयास करें। ये आपके अध्ययन को बेहतर समझने में सहायता करेगा।

विशेष विषय सूचि के अतिरिक्त, हर पाठ में व्यवहारिक प्रोजेक्ट पाठ्य सामग्री को आपके जीवन में अधिक लाभ पहुंचाने के लिये हैं। पुस्तक के अन्त में जो परिशिष्ट (अपेन्डिक्स) के पृष्ठ है वे काट कर अपनी बाइबल में चिपकाने वा रखने के लिये है। उनका उपयोग करें।

जब आप एक भाग (पुस्तक) समाप्त कर लें तो **दूसरे भाग** को जारी रखें।

अधिक जानकारी के लिये हमें इस पते पर सम्पर्क करें:–
E_mail: info@nuevavidaencristo.org

आप इस पुस्तक की मुफ्त कॉपी नीचे दी गई वेबसाइट से
प्राप्त कर सकते हैं:– **www.NewLifeDiscipleship.com**

स्पेनिश में मुफ्त सामग्री के लिए **www.obrerofiel.com** पर जायें।

ये स्पेनिश, फ्रेंच, यूक्रेनियन, रशियन और स्वाहिली में भी उपलब्ध है। यह शीघ्र ही रोमानियन में भी उपलब्ध होगी। ये सामग्री PDF फोरमेट में हैं और पढ़ने के लिये Adobe Acrobat Reader की आवश्यकता होगी। ये Reader मुफ्त है और इसे इस पर download कर सकते हैं: http://www.adobe.com

Permission is given to make copies of this material, with the condition that you cite the original source and make no changes or additions to its content or format.

Copyright 1993 @ Mark Robinson
Second English edition 2004.
First Hindi edition, 2016

Produced by Mark Robinson in cooperation with believers in Costa Rica
Avant Ministries-Camino Global,
10000 N Oak Trafficway, Kansas City, MO 64155 USA

Translated, reproduced and distributed in India by:
Partners in Equipping
76-B, Pocket IV, Mayur Vihar Phase I
New Delhi - 110 091
E-Mail: partnersinequipping@gmail.com

Aug 17, 2019

विषय सूचि

शिक्षक की मार्गदर्शिका 4

मसीही जीवन का परिचय 5

चरण 1 बचाया हुआ 6

चरण 2 सुरक्षित 8

चरण 3 विजयी 10

चरण 4 सब का प्रभु 12

चरण 5 आत्मा में जीना 14

चरण 6 परमेश्वर मुझ से बातें करते हैं 16

चरण 7 परमेश्वर से बातें करना 18

चरण 8 प्रतिदिन परमेश्वर से भेंट करना 20

चरण 9 मेरी कलीसिया 23

चरण 10 गवाही देना 25

चरण 11 बपतिस्मा और प्रभु भोज 27

चरण 12 परिवार 29

चरण 13 यीशु के पीछे हो लेना 31

परिशिष्ट 33

शिक्षक की मार्ग दर्शिका

1. हम आपको नये विश्वासियों को चेला बनाने की चुनौती स्वीकार करने के लिये और मसीह में नये जीवन को मार्गदर्शिका के इस्तेमाल करने पर बधाई देते हैं। इस अध्ययन का परिणाम सर्वदा के लिये फल ला सकता है।

2. आपके उत्तर देने में बाइबल ही आपके लिये मुख्य हो। विद्यार्थियों को अपने आप बाइबल के हिस्से को देखना चाहिये और जो बाइबल कहती है उसी के आधार पर उत्तर देने का प्रयास करना चाहिए।

   कुछ नये विश्वासियों की सहायता उनकी बाइबल के पदों को देखने में करना चाहिये।

3. इस पुस्तिका को कई विभिन्न प्रकार से इस्तेमाल किया जा सकता है, अधिकतर मामलों में आप एक पाठ एक सप्ताह ही में अध्ययन करेंगे, हर पाठ के दिये कार्य करने के लिये चेलों को प्रोत्साहित करना चाहिये।

4. अपने सत्रों को प्रयास करें कि अधिक लम्बे ना हों।

5. विद्यार्थियों को अपनी ही भाषा में उत्तर देने को प्रोत्साहित करें। बाइबल से शब्द ब शब्द कॉपी ना करें। उनके अपने स्वयं के शब्द जो पाठ पढ़ाया गया है उसका आंकलन करने में सहायता करेंगे।

6. उपदेश या प्रचार करने में अलग रहें। प्रश्नों को ये खोजने में इस्तेमाल करें कि विद्यार्थियों ने क्या समझा या समझते हैं और क्रियाशील सहभागिता के लिये प्रेरित करें।

7. हर सत्र के लिये अपने आप अच्छी तैयारी करें एक शिक्षक की तरह, आपको विषय से परिचित होना चाहिये और हर पाठ की मुख्य विचारधारा से।

   आपकी तैयारी में विद्यार्थियों के लिये प्रार्थना शामिल होना चाहिये, और आपके अपने हृदय को पाठ के लिये तैयार होना चाहिये।

8. प्रयास करें कि विद्यार्थीगण अपने जीवनों के लिये व्यवहारिक उपयोग के बारे में सोचें। विशेष व्यवहारिक उपयोग में उनकी सहायता करें।

   हर पाठ के बगल के बॉक्स में कार्य इस अभिप्राय से बनाये गये हैं कि उनको इस्तेमाल किया जा सके।

9. विद्यार्थियों में प्रार्थना की आदत डालने में सहायता करें। उनके साथ प्रार्थना करते हुए सिखायें।

10. ये समझना महत्वपूर्ण है कि शिष्यता–मसीह में नये जीवन की अपेक्षा बहुत अधिक है। शिष्यता एक शिष्य के जीवन में परिवर्तन लाती है।

    ये पुस्तिका केवल एक सहायता मात्र है। विद्यार्थियों को अपने चरित्र के बदलाव लाने में सोचने के तरीकों और आदतों आदि में निरन्तर सहायता की आवश्यकता होती है।

11. ये बहुत अधिक महत्वपूर्ण है कि शिष्य उन आदतों को सीखते हैं जैसे हर रोज़ बाइबल पढ़ना, प्रार्थना करना और धर्मशास्त्र के पदों को याद करना।

    हर सत्र के आरम्भ में समय लेकर पहले के याद किये पदों को दुहरा लें और पूछें कि प्रतिदिन का बाइबल अध्ययन कैसा चल रहा है। जिन विद्यार्थियों ने दिये गये कार्यों को पूरा नहीं किया है उन्हें ना डांटें पर पक्का करें कि उन्हें कार्य पूरा करने के लिये प्रोत्साहित करें।

12. परमेश्वर जो शिष्यों के जीवन में कर रहा है उसके प्रति संवेदनशील रहें। हर सत्र में से समय निकालें कि जो भी प्रश्न उनके पास हों उनका उत्तर दे सकें या वे जो अपने व्यक्तिगत जीवन में समस्या का सामना कर रहे हैं उसमें उनकी सहायता करना।

    ये याद रखें कि ऐसा समय भी आता है जब पाठ में से हर एक प्रश्न को समय के आभाव में देखना सम्भव नहीं होता। इन मामलों में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा करने के लिये चुनाव करें।

परमेश्वर के परिवार में स्वागत है

जब आपने मसीह पर विश्वास किया तो आपने एक नये जीवन की शुरुआत की, मसीह के साथ एक रोमांच। इस पुस्तक का उद्देश्य ये है कि आपको परिचित कराया जाये कि बाइबल मसीही जीवन के बारे में क्या कहती है। मसीह में बढ़ना एक प्रक्रिया है। हमें हर रोज भोजन की वा मसीह के साथ चलने की आवश्यकता होती है। जैसा हम उसके साथ सम्बन्ध के लिये समय समर्पित करते हैं तो हम परिपक्वता की ओर बढ़ेंगे।

किस प्रकार मसीह के साथ चलना है उसका सारांश

1. मसीह को बेहतर जानने के लिये प्रतिदिन बाइबल पढ़ें।
2. प्रतिदिन प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर से बातें करें।
3. परमेश्वर को अपने जीवन का नियंत्रण करने दें, उसकी इच्छा में अपने आप को समर्पित करें।
4. दूसरों से मसीह के बारे में बातें करें।
5. कलीसिया जहां मसीह प्रचार किया जाता है वहां दूसरे विश्वासियों के साथ संगति करें।
6. एक या दो विश्वासी को ढूंढ़ें जिनके साथ आप प्रार्थना कर सकते हैं और अपनी लगातार सफलता और असफलता के बारे में बता सकते हैं।
7. दूसरों में रूचि लेकर अपने प्रेम के माध्यम से अपने नये जीवन को प्रगट करें।

मसीह केन्द्रित जीवन

मसीही जीवन इस क्रूस की तस्वीर द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। मसीह हमारे जीवन का केन्द्र है। हम उसमें समर्पित होकर जीते हैं।

ऊपर से नीचे की रेखा परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध बाइबल और प्रार्थना के द्वारा प्रगट करते हैं।

क्षितिजीय रेखा हमारे एक दूसरे के साथ के सम्बन्ध प्रगट करती है। हम कलीसिया में विश्वासियों के साथ संगति खोजते हैं। वो जो विश्वासी नहीं हैं, हमें उन्हें मसीह के बारे में बताना चाहिये।

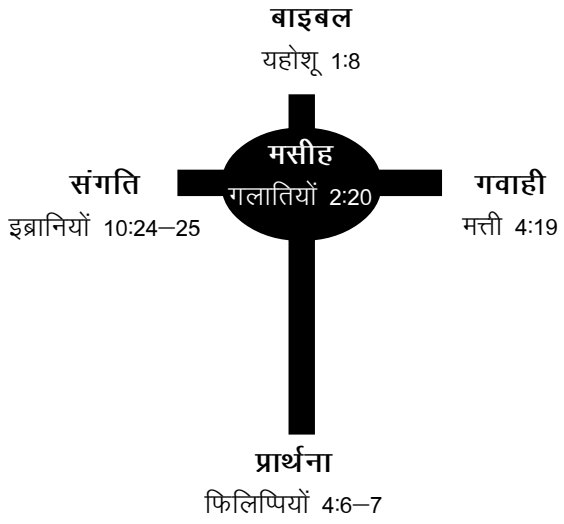

5

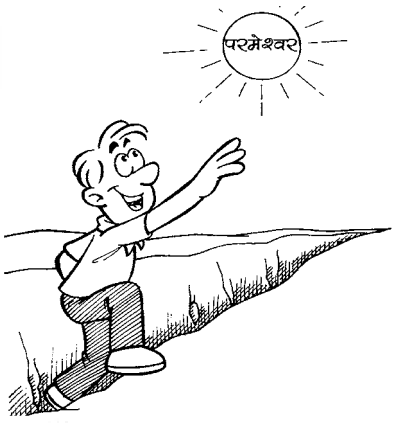

चरण 1
बचाया हुआ

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)

—— बचाये जाने के लिये – ये विश्वास करना जरूरी है कि परमेश्वर का अस्तित्व है।

—— पाप परमेश्वर और मनुष्यों के बीच अलगाव का कारण है।

—— मैं चर्च जाने और अच्छे कार्य करने के द्वारा बचाया गया हूं।

पुराना जीवन

1. इफिसियों 2:1 के अनुसार इससे पहले कि मसीह ने हमें अनन्त जीवन दिया हमारी दशा क्या थी? ——————————————

——————————————————————

2. रोमियों 3:23 पढ़ें, क्या इसका मतलब है कि <u>सबने</u> पाप किया?

हाँ ☐ नहीं ☐

यदि ये मामला था, तो मसीह का हमें बचाने के पहले हमारी दशा क्या थी? ——————————————————

3. बाइबल कहती है हम दोषी ठहर चुके। क्यों? (यूहन्ना 3:18) ————

——————————————————————

परमेश्वर का कार्य

4. इफिसियों 2:4–5 में किस प्रकार परमेश्वर को बताया गया है?

——————————————————————

5. इस हिस्से के अनुसार परमेश्वर ने हमारे लिये क्या किया है? ———

——————————————————————

6. रोमियों 5:8 देखें – परमेश्वर अपना प्रेम हमारे लिये किस प्रकार प्रगट करता है? ——————————————————

——————————————————————

7. इफिसियों 2:8–9 पढ़ें। परमेश्वर ने निर्णय किया कि हम अपने कर्मों के द्वारा नहीं बचाये जा सकते (पद 9)। बचाये जाने के लिये लोग किस प्रकार के अच्छे कार्य करते हैं? ——————————————

——————————————————————

8. हम ———————— द्वारा बचाये गये हैं ————— (पद 8)

अनुग्रह का मतलब *"अनुपयुक्त वरदान"*। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने हमें उद्धार मुफ्त दिया है भले ही हम इसके अधिकारी नहीं थे।

9. परमेश्वर की सन्तान होने के लिये हमें किस पर विश्वास करना चाहिये?

गलातियों 3:26 ——————————————————

निर्णय का समय

क्या आपने पहले ही मसीह को ग्रहण कर लिया है?

हाँ ☐ नहीं ☐

यदि हाँ, कब? ——————

यदि नहीं, क्या आप करना चाहते हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

मसीह को ग्रहण करना

1. मान लें कि आप पापी हैं, अब आगे को ना छिपायें।
2. अपने को पाप से दूर करने का निश्चय करें। पश्चाताप करें।
3. विश्वास करें कि मसीह आपके पापों के लिये मरा और मृतकों में जी उठा।
4. यीशु से कहें कि वो आपके हृदय में आये और आपके पापों को क्षमा करें और आपके जीवन का नियंत्रण लें।

नीचे दी गई प्रार्थना एक नमूने के रूप में है कि मसीह को कैसे ग्रहण करना है।

प्रिय प्रभु,

मैं जानता हूँ कि मैं पापी हूं और मुझे आपकी क्षमा की आवश्यकता है। मैं विश्वास करता हूं कि आप मेरे पापों के लिये मरे और मृतकों में से जी उठे। मैं पाप को पीछे छोड़ना चाहता हूं और एक शुद्ध जीवन जीना चाहता हूं। मेरे दिल में आयें और मेरे उद्धारकर्ता बनें। मैं आपके पीछे चलना चाहता हूं, मेरा उद्धार करने के लिये धन्यवाद। आमीन।

इसके विषय में सोचें

अपने घर के बारे में और हर एक के लिये और हर चीज़ जिससे आप प्रेम करते हैं सोचें कि किस प्रकार उन पर असर डालता हैं?

अपने भविष्य के बारे में सोचें। यदि आप अपने पुराने जीवन में जी रहे हैं तो आप को परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ेगा। पढ़ें: प्रकाशित वाक्य 20:11–15 और उस पर सोचें, परमेश्वर के उस महान प्रेम के लिये धन्यवाद।

मजबूती से बढ़ना

आदत बनाना महत्वपूर्ण है जो आपको नये जीवन में बढ़ने में सहायता करेगा।

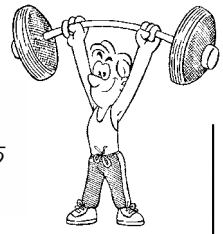

जैसे कसरत शरीर को ताकत देता है, वैसे ही आत्मिक अनुशासन है जो आप को मसीह में बढ़ने में सहायता करेगा।

इस अनुशासन में ये शामिल हैं:

बाइबल अध्ययन
प्रार्थना
बाइबल पदों को स्मरण करना

इन पाठों को पूरा करने के अतिरिक्त **बाइबल के एक हिस्से को पढ़ना महत्वपूर्ण है और हर रोज परमेश्वर से प्रार्थना करना।**

इस सप्ताह यूहन्ना की पुस्तक से 1–7 अध्याय पढ़ें, 1 अध्याय प्रतिदिन।

पढ़ने से पहले प्रार्थना करें, अपने हृदय को तैयार करना कि वह अपने वचन से क्या बताने वाला है।

हर अध्याय पढ़ने के बाद फिर प्रार्थना करें, परमेश्वर से उसके विषय में बातें करें जो आपने पढ़ा है।

परमेश्वर की सहायता से, मैं अपनी बाइबल में एक अध्याय पढ़ने की प्रतिज्ञा करता हूं।

दिनाँक ————————

स्मरण पदः इफिसियों 2:8–9

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और ये तुम्हारी ओर से नहीं बरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण ऐसा न हो कि कोई घमन्ड करें"।

10. मसीह में विश्वास होने का मतलब अपनी भाषा/शब्दों में बतायें ———— ————————————————————

नया जीवन

11. मसीह किस अभिप्राय के लिये आया? यूहन्ना 10:10———————— ————————————————————

12. जो व्यक्ति मसीह को ग्रहण करता है उसे परमेश्वर क्या देता है? यूहन्ना 1:12 ————————————————————

13. यूहन्ना 5:24 के अनुसार जब व्यक्ति मसीह को ग्रहण करता है तो क्या होता है? ————————————————————

14. इफिसियों 2:10 के अनुसार परमेश्वर ने हमें किसलिये बनाया या सृजा? ————————————————————

नोट करें कि हमारा उद्धार कार्यों के द्वारा नहीं हुआ पर हम भले कामों के लिये सृजे गये हैं।

15. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 5:17, "मसीह में" होने का मतलब कि उसे उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया है। तो यदि कोई "मसीह" में है तो वह क्या बन जाता/जाती है? ————————————————————

16. अपने शब्दों में इसे समझायें – "पुराना चला गया है और नया आ गया है" ———————————————— ————————————————————

————————————————————

सारांश में

अपने शब्दों में जो हमने अध्ययन किया है उसको सारांश में बतायें।

1. बिना मसीह के आपका जीवन कैसा था? ———————— ————————————————————

————————————————————

2. मसीह ने आपके लिये क्या किया? ———————— ————————————————————

————————————————————

3. उस नये जीवन को जो परमेश्वर ने आपको दिया अपने प्रतिदिन के जीवन में आप किस प्रकार दिखाओगे? ———————— ————————————————————

————————————————————

————————————————————

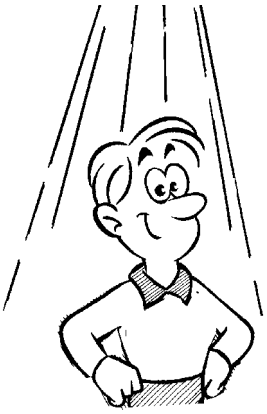

चरण 2

सुरक्षित

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)
—— ठीक अभी मैं निश्चिंत हूं कि मेरा उद्धार हुआ है।
—— परमेश्वर चाहता कि मैं पाप करूं जिससे वह मुझे अपना अधिक प्रेम दिखा सके।
—— यदि मैं पाप करूं और बिना अंगीकार किये मर जाऊं, मैं अभी भी उद्धार पाया हुआ हूं।

परमेश्वर मुझे सुरक्षा देना है

1. रोमियों 8:38–39 पढ़ें – एक बार जब हमने मसीह को ग्रहण कर लिया है, क्या कोई तरीका है कि हम परमेश्वर के प्रेम से अलग किये जा सकते हैं?
———————————————————————

पढ़ें **यूहन्ना 10:27–29** और प्रश्न 2–7 का उत्तर दें।

2. हमें क्या दिया गया है? (पद 28) ——————————————
3. अनन्त जीवन कौन देता है? (पद 28) ——————————————
4. क्या अन्त में कुछ अनन्त आ सकता है? ——————————————

क्रिया "देना" वर्तमान काल में है। ये संकेत करता है कि हमें पहले ही अनन्त जीवन मिल चुका है। अनन्त जीवन उस समय शुरु नहीं होता जब हम मरते हैं पर उस क्षण से जिसमें हम यीशु को व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं।

5. हम कब नाश होंगे? (पद 28) ——————————————

ये उस तथ्य का संदर्भ देता है कि अनन्त जीवन का कभी भी अन्त नहीं होता।

6. क्या कुछ या कोई हमें *मसीह* के हाथों से छीन सकता है? (पद 28)
———————————————————————
7. क्या कुछ या कोई हमें *पिता* के हाथों से छीन सकता है? (पद 29)
———————————————————————

अब पढ़ें **इफिसियों 1:13–14** और प्रश्न 8–9 का उत्तर दें।

8. वह क्या काम है जो परमेश्वर ने हममें किया?
(पद 13) ——————————————
9. हम पर कब मुहर/छाप लगाई गई? (पद 13) ——————————————

परमेश्वर ने हमें गारन्टी के तौर पर पवित्र आत्मा दिया ("प्रतिज्ञा") इस तथ्य से कि हम उसी के हैं जब तक मसीह हमारे लिये आता है।

पढ़ें: मैं मसीह में कौन हूं? पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट 2 में।
जब आप इन्हें पढ़ते हैं तो कैसा महसूस करते हैं? क्या ये आपको भरोसा देते हैं? ——————————————
——————————————

धन्यवाद देना

यूहन्ना 10:28–29 के अनुसार आप यीशु मसीह के हाथों में हैं और उसी समय आप पिता के हाथों में हैं।

सोचें कि आपका जीवन उन हाथों में कितना सुरक्षित है। कोई आश्चर्य नहीं ये दो बार कहता है कि कोई हमें उस स्थान से छीन नहीं सकता।

इसके बारे में सोचें

पाप करना, कहना या सोचना कुछ भी परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध, यद्यपि परमेश्वर मुझ से प्रेम करता है, वह मेरे पाप से घृणा करता है।

इसके बारे में सोचें और दो कारण लिखें कि आप क्यों विश्वास करते हैं कि एक मसीही को पाप करने से दूर रहना चाहिये:–

1. ——————————
——————————
——————————
2. ——————————
——————————
——————————

इस सप्ताह

इस सप्ताह, अपने परिवार के एक सदस्य के लिये प्रार्थना करें जिसने अभी तक मसीह को ग्रहण नहीं किया है। उनके उद्धार के लिये मांगें, उनका नाम लिखें।

_____

क्या अपनी बाइबल के हिस्से में परेशानी महसूस करते हैं? यहां नुस्खा है, नये नियम की दस पुस्तकों के नाम याद करें।

मत्ती
मरकुस
लूका
यूहन्ना
प्रेरितों के काम
रोमियों
1 कुरिन्थियों
2 कुरिन्थियों
गलातियों
इफिसियों

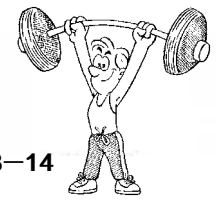

मज़बूती से बढ़ना

पढ़ें यूहन्ना 8–14 इस सप्ताह

(एक दिन में एक अध्याय)

स्मरण पदः यूहन्ना 10:27–28

"मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं और वे कभी नाश न होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा"।

10. पढ़ें 1 यूहन्ना 5:11–12 क्या आपके पास अनन्त जीवन है? ————————

    हम निश्चित रूप से कैसे जान सकते हैं कि हमारे पास अनन्त जीवन है या नहीं? ————————————————————

    ————————————————————

चितौनी

11. अब चूंकि मेरा उद्धार हो चुका है, मैं क्यों न पापों से खेलूं?

    रोमियों 6:1–2 ————————————————————

    ————————————————————

    पढ़ें **इब्रानियों 12:5–10** और प्रश्न 12–13 का उत्तर दें।

12. इसलिये कि मैं परमेश्वर की सन्तान हूं, वह मुझे अनुशासित करता है, वह ऐसा क्यों करता है? (पद 6) ————————————————

    ————————————————————

13. परमेश्वर मुझे किस अभिप्राय के लिये अनुशासित करता है? (पद 10)

    ————————————————————

    ————————————————————

परमेश्वर मुझे एक चुनाव देता है

ये परमेश्वर की इच्छा नहीं कि आप पाप करें। पर मनुष्य होकर हम परीक्षा में पड़ जाते हैं। इसका मतलब है कि हम पाप के विरुद्ध अपने जीवनों में संघर्ष करेंगे।

क्या होता है जब आप पाप करते हैं? आप अपने उद्धार को नहीं खोते, पर ये आपकी परमेश्वर के साथ की संगति को प्रभावित कर सकता है। जैसा प्रेमी पिता है, उसने परीक्षा से बचने का तरीका उपलब्ध कराया है और जब हम पाप करते उसके पास आने की सुविधा। हम चरण 3 में इसका अध्ययन विस्तार से करेंगे।

गहराई से खोजना

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 3:11–15 हर मसीही का न्याय किया जायेगा, ये नहीं देखा जायेगा कि उनका उद्धार हुआ है या नहीं पर उनके कामों को जांचा जायेगा।

यदि उनके काम परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं तो मसीही को पुरुस्कार दिया जायेगा, यदि वे नहीं हैं तो वे ये विशेष पुरुस्कार खो देंगे (ये पुरुस्कार उद्धार की तरह नहीं हैं इसलिये कि व्यक्ति का पहले ही उद्धार हो चुका है पद 15 के अनुसार)

क्या आप पुरुस्कार प्राप्त करेंगे या आप मुश्किल से स्वर्ग में प्रवेश करेंगे?

————————————————————

————————————————————

9

चरण 3

विजयी !

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)

—— यदि हमारी परीक्षा की गई तो ये अनिवार्य है कि हम पाप करेंगे इसलिये कि हम बहुत कमजोर हैं।

—— यदि हम पाप करते हैं और परमेश्वर के सामने मान लेते हैं तो वह हमें क्षमा करेगा।

—— हमारे आत्मिक शत्रु हैं जो परीक्षा करते हैं।

हम लड़ाई में उलझे हुए हैं

बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमारी परीक्षा नहीं करता (याकूब 1:13)। नीचे दिये गये हिस्से के अनुसार वे कौन हैं जो हमारे आत्मिक शत्रु हैं।

1. याकूब 4:4 ————————————————————

2. गलातियों 5:17 ————————————————————

3. 1 पतरस 5:8 ————————————————————

हर शत्रु से हमें कैसे निपटना चाहिये?

4. संसार से (रोमियों 12:2) ————————————————————

5. शरीर से (गलातियों 5:16) ————————————————————

6. शैतान से (याकूब 4:7) ————————————————————

हम विजयी हो सकते हैं

7. जो शैतान से बड़ा है? (1 यूहन्ना 4:4) ————————————————————

8. जो विश्वासियों में रहता है? (1 कुरिन्थियों 3:16) ————————————————————

9. जो हमें विजय देता है? (1 कुरिन्थियों 15:57) ————————————————————

————————————————————

परमेश्वर हमें विजयी होने के लिये साधन देता है

नीचे दिये गये हिस्से के अनुसार हमें परीक्षा में पड़ने से बचने के लिये क्या करना चाहिये?

10. भजन 119:11 ————————————————————

11. मत्ती 26:41 ————————————————————

12. नीतिवचन 4:14–15 ————————————————————

13. 2 तीमुथियुस 2:22 ————————————————————

गहराई से खोजना

हम सब की परीक्षा हुई है पर इसका मतलबल ये नहीं कि हम पाप करें। 1 कुरिन्थियों 10:13 में तीन सत्य हैं जो हमें प्रोत्साहित करती हैं:

1. परीक्षाएं मानव का एक हिस्सा हैं, उन पर विजय पाना सम्भव है।
2. परमेश्वर परीक्षाओं की सीमा रखता है; हम उनका मुकाबला कर सकते हैं।
3. हर परीक्षा में परमेश्वर हमेशा बचाव उपलब्ध कराता है।

इन सत्यों पर मनन करें और उन पर विश्वास करें।

सत्य की पुष्टि करना

मसीह परीक्षा पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। क्या हाल ही में आप याद कर सकते हैं जब आपकी परीक्षा की गई हो और आप परमेश्वर से सहायता से विजयी हुए हो?

————————————————————

————————————————————

————————————————————

चीज़ों को सही करना

जिसके सामने पाप मान लेना है वह परमेश्वर है (भजन 32:5); पर ऐसे मामले हैं जिनमें इतना काफी नहीं है। मुझे एक कदम आगे जाना है।

यदि मेरे पाप ने दूसरे व्यक्ति पर असर डाला है, मुझे ढूंढ़ना है कि व्यक्ति और उससे भी क्षमा प्राप्त करना है (याकूब 5:16, मत्ती 5:23–24)।

प्रेरित यूहन्ना की व्याख्या – मैं कैसे परमेश्वर के साथ सही हो सकता हूं जब मैं जिसको देखता ही नहीं, जब तक मैं अपने पड़ोसी के साथ ठीक नहीं हूं जिसे मैं देखता हूं? (1 यूहन्ना 5:20)

इस सप्ताह

इस सप्ताह परमेश्वर से एक मित्र, सह–कर्मी या पड़ोसी के लिये प्रार्थना करें जिन्हें यीशु मसीह को जानने की आवश्यकता है।

इस सप्ताह मैं ——— के लिये प्रार्थना करूंगा।

नये नियम की दस पुस्तकों को याद करें, पिछले पाठ की दस पुस्तकें दुहरायें।

फिलिप्पियों
कुलुस्सियों
1 और 2 थिस्सलुनीकियों
1 और 2 तीमुथियुस
तीतुस
फिलेमोन
इब्रानियों
याकूब

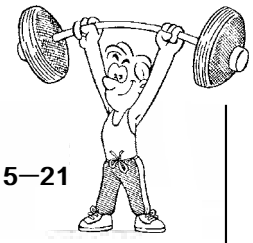

मज़बूती से बढ़ना

पढ़ें यूहन्ना 15–21 इस सप्ताह

(एक अध्याय प्रतिदिन)

स्मरण पद 1 यूहन्ना 1:9

"यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है"।

हमें क्षमा किया जा सकता है

14. 1 यूहन्ना 1:8 के अनुसार क्या कोई, मसीही भी पाप रहित होने का दावा कर सकता है? ————————————————————

पाप करने के द्वारा परमेश्वर और विश्वासियों के बीच की संगति टूट गई है, परमेश्वर प्रसन्न नहीं है और यद्यपि वह हमसे प्रेम करता है, यदि हम अपने पापों को मानने को तैयार नहीं हैं तो वह हमारी नहीं सुनेगा।

15. क्षमा पाने के लिये हमें क्या करना चाहिये? पढ़ें 1 यूहन्ना 1:9 ———

————————————————————————————

मैं अपने पापों का अंगीकार कैसे करूं?

अंगीकार करना केवल कहना नहीं है "मैंने पाप किया है" सच्चा अंगीकार बहुत सी चीज़ें मांगता हैः–

क) ईमानदार बनें
ख) पश्चाताप करें (सच्चा अफसोस और फिर पाप ना करने की इच्छा)
ग) स्पष्ट हों (परमेश्वर को बताना कि मैंने क्या किया)
घ) अपनी भूल को जल्द पहचानना। जितना शीघ्र हम पहचानें कि मैंने पाप किया है, मुझे मान लेना चाहिये नहीं तो मैं और अधिक पाप में गिरने के खतरे में हूं।
ड.) नम्र होकर उन लोगों से क्षमा याचना करना जो मेरे पापों से प्रभावित हुए हैं।
च) क्षमा स्वीकार करें, हमें फिर पाप करने की ओर नहीं जाना है जो हमने पहले ही मान लिया है। यदि परमेश्वर ने हमें क्षमा कर दिया है हमें उसकी क्षमा स्वीकार करना चाहिये और विश्वास करना, उसे धन्यवाद देना। शैतान के दावों का इन्कार करना कि हमें क्षमा नहीं किया जा सकता

16 1 यूहन्ना 1:9 के अनुसार, जब मैं अपने पापों को मान लेता हूं तब क्या होता है?

क)————————————————————————————

ख) ————————————————————————————

सारांश

1. हमारे आत्मिक शत्रु कौन हैं?
2. उन पर विजय पाने के हमारे कौन कौन से साधन हैं?
3. यदि हम पाप करते हैं क्षमा किये जाने के लिये हमें क्या करना चाहिये?

चरण 4

सब का प्रभु

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)

—— मुझे अपने जीवन का नियंत्रण करने का अधिकार है।

—— यदि मैं अपने जीवन का नियंत्रण मसीह को दूं तो वह मेरे सब खेल/मजाक दूर कर देगा।

—— मैं जानता हूं कि किस प्रकार अपना जीवन चलाना है। किसी और को कोई अधिकार नहीं कि मुझे बताये कि क्या करना है।

बॉस कौन है?

एक शीर्षक है जो अक्सर मसीह को "प्रभु" कहने के संदर्भ में लिया जाता है, यद्यपि संसार आज के समय में परमेश्वर के विरोध में जीता है, एक दिन हर एक घुटना मसीह के आगे झुकेगा और हर जुबान मानेगी कि वह प्रभु है (फिलिप्पियों 2:10–11)।

1. इसे कहने का क्या मतलब है "कि यीशु मेरे जीवन का प्रभु है"?

   _____

2. यीशु को मेरे जीवन को चलाने का क्या अधिकार है? _____

   कुलुस्सियों 1:16 _____

   2 कुरिन्थियों 5:15 _____

   अभी मेरा जीवन किसका है? _____

मेरा प्रतिउत्तर

3. यदि मसीह मेरा स्वामी है, तो मैं उसको कैसे उत्तर दे सकता हूं – 2 कुरिन्थियों 5:15 के अनुसार _____

   _____

4. पढ़ें गलातियों 2:20, ये पद मसीही जीवन की आवश्यकता का सारांश है नीचे दिये गये कहावत को समझाओ "अब मैं जीवित ना रहा पर अब मसीह मुझ में जीता है" _____

   _____

   "मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाये जाने" का मतलब कि मेरा पुराना जीवन मर गया या मेरे पीछे बना रहता है। अब मेरे पास मसीह में नया जीवन है, पाप पर विजय पाने की शक्ति के साथ।

5. मुझे मसीह में ये नया जीवन कैसे जीना चाहिये? गलातियों 2:20 का दूसरा हिस्सा देखें।

   _____

   _____

जाँच

बहुत सी चीज़ें हैं जो अपने आप में बुरी नहीं हैं पर वो स्थान लेने आ सकती हैं जिसे केवल मसीह ही हमारे जीवनों में रखता है।

जो चीज़ें आपके जीवन में मसीह के कार्य में रूकावट डालती हैं उन पर निशान लगायें:–

- ☐ सम्पत्ति
- ☐ मित्र
- ☐ अभिलाषायें
- ☐ कार्य
- ☐ मनोरंजन
- ☐ आदतें
- ☐ आपका चरित्र
- ☐ परिवार
- ☐ दूसरे _____

इसके विषय में सोचें

कौन सा विशेष क्षेत्र है जिसे आपको मसीह के नियंत्रण में समर्पित करने की आवश्यकता है?

_____

_____

_____

इस सप्ताह

अब नये नियम की नीचे दी गई पुस्तकों को याद करना समाप्त करें, जो दूसरे नाम पहले सीख चुके हैं उन्हें दुहराएं।

1 और 2 पतरस
1, 2 और 3 यूहन्ना
यहूदा
प्रकाशितवाक्य

भय को परास्त करना

क्या ये आपको ये सोचने में डराता है कि अपने जीवन को पूरी तरह मसीह को समर्पित कर दूं?

क्या परमेश्वर वास्तव में वो चाहता जो मेरे जीवन के लिये उत्तम है?

यहाँ कुछ लोगों के मसीह को समर्पित करने के बारे में डर है। जो आपको प्रभावित करते उन पर चिन्ह लगाएं।

- ☐ मुझे डर लगता है कि यीशु मेरी समस्याओं को पूरी तरह नहीं समझता।
- ☐ मुझे डर है कि यीशु ऐसी आज्ञा देगा जो मैं पूरी नहीं कर सकता।
- ☐ मुझे डर है कि यीशु मुझे उस व्यक्ति से विवाह नहीं करने देगा जो मुझे खुशी देगा।
- ☐ मुझे डर है कि परमेश्वर मेरे मित्रों को अलग कर देगा और मज़ाक जो मैं करता हूं।
- ☐ मुझे डर है कि मैं विश्वास योग्य नहीं रहूंगा या वो नहीं कर पाऊंगा जो वो चाहता कि मैं करूं।

अब पढ़ें 1 पतरस 5:6–7 इस हिस्से के प्रकाश में, क्या आप सोचते कि आपके भय का कोई आधार है?

हाँ ☐ नहीं ☐

मज़बूती से बढ़ना

पढ़ें प्रेरित 1–7

(दिन में एक अध्याय)

स्मरण पदः गलातियों 2:20

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और अब मैं जीवित ना रहा पर मसीह मुझ में जीवित हैं, मैं जो शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया"।

6. जानने का कौन सा तरीका अच्छा है, यदि मसीह मेरे जीवन का प्रभु है? लूका 6:46 ————————————————————

7. ये क्यों जरूरी है कि मैं अपना जीवन मसीह के नियंत्रण में दे दूं?

   - ✓ मैं दो प्रभुओं की सेवा नहीं कर सकता। मुझे निश्चय करना है कि क्या मुझे परमेश्वर की सेवा करना है या संसार की। मैं दोनों को प्रसन्न नहीं कर सकता (लूका 16:13)।
   - ✓ बिना मसीह के मेरे जीवन का मार्ग–दर्शक के मैं पाप का दास हूँ (रोमियों 6:16)।
   - ✓ एक दिन मुझे हिसाब देने के लिये यीशु के न्याय आसन के सामने खड़ा होना है (2 कुरिन्थियों 5:10)

कौन सबसे अधिक मेरे जीवन का प्रबन्ध करने योग्य है?

	यीशु	मैं स्वयं
जो हमेशा मेरे जीवन का अच्छा करने की इच्छा रखता है।	☐	☐
जो जानता है कि मेरे जीवन के लिये उत्तम क्या है?	☐	☐
जो मेरे जीवन में उत्तम करने योग्य है।	☐	☐

मुझे मसीह को क्या समर्पित करना चाहिये?

मेरे जीवन का कुछ क्षेत्र जो उसे समर्पित करता हैः

8. रोमियों 12:1 ————————————————————

   यशायाह 26:3 ————————————————————

   इफिसियों 5:15–16 ————————————————————

   2 कुरिन्थियों 9:6–7 ————————————————————

प्रतिदिन मसीह को समर्पित करना

रोमियों 12:3 हमें बताता है कि अपनी देह मसीह को समर्पित करना है। नीचे, दी हुई प्रार्थना इस प्रतिदिन के समर्पण के लिये सेवा करेगीः

"प्रभु मैं अपने आपको समर्पित करता हूं
मेरे मन को लें जो मैं सोचता हूं
आंखों को मेरी लें जो मैं देखता हूं
होठों को मेरे लें जो मैं बोलता हूं
मेरे हृदय को लें, जो मैं महसूस करता हूं और मेरा व्यवहार
हाथों को मेरे लें जो मैं करता हूं।
पांवों को मेरे लें जहां मैं जाता हूं।
मेरी देह को लें ये आपका मन्दिर है।
मुझे अपने पवित्र आत्मा से भर दें।
मैं आपकी आज्ञा मानना चाहता हूं।

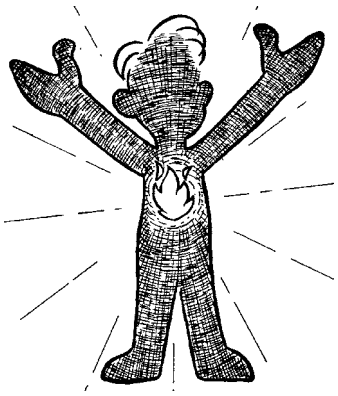

चरण 5

आत्मा में जीना

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)

—— पवित्र आत्मा परमेश्वर की ताकत है।

—— पवित्र आत्मा हमारे पाप की समझ देता है।

—— पवित्र आत्मा सभी परमेश्वर के सन्तानों में बास करता है।

पवित्र आत्मा का प्रारम्भिक कार्य

जब वह स्वर्ग में पिता के पास चढ़ गया मसीह यीशु ने पवित्र आत्मा भेजा (सत्य का आत्मा) स्वयं की गवाही देने के लिये (यूहन्ना 15:26)।

1. यूहन्ना 16:8—9 के अनुसार अविश्वासियों में पवित्र आत्मा का काम क्या है?——————————————————————

   ——————————————————————

2. जो व्यक्ति मसीह को ग्रहण करता है पवित्र आत्मा उसके नये जन्म का कारण होता है (यूहन्ना 3:3—8)। "नया जन्म" पाना आपके लिये क्या मतलब है?

   ——————————————————————

   ——————————————————————

   इसके अतिरिक्त पवित्र आत्मा व्यक्ति में दूसरी चीज़ें करता है जो मसीह को ग्रहण करता है जैसा हम नीचे देखते हैं।

3. 1 कुरिन्थियों 12:12—13 के अनुसार हम सब———————— आत्मा के द्वारा एक देह में।

   आत्मा के साथ बपतिस्मा पानी के बपतिस्में का संदर्भ नहीं देता, पर पवित्र आत्मा का कि हमें मसीह की देह का सदस्य बनाता है, वह है कलीसिया, जो पूरे संसार में सच्चे विश्वासियों द्वारा बनाई जाती है।

4. इफिसियों 1:13 के अनुसार प्रतिज्ञा की पवित्रात्मा के द्वारा हम ——— —————————————————— थे।

   आत्मा के द्वारा छाप लगने का मतलब परमेश्वर की नई सन्तान परमेश्वर के सुरक्षित हाथों में है उस क्षण से जब उसने विश्वास किया (पद 14)।

5. 1 कुरिन्थियों 3:16 के अनुसार मसीही परमेश्वर और पवित्र आत्मा का मंदिर है जो—————————————— करता है।

   इसका मतलब है कि पवित्र आत्मा सत्य में और स्थायी रूप से हर मसीही में बास करता है।

आत्मा के प्रारम्भिक कार्य का सारांश

- ✓ पाप से कायल होना
- ✓ नये जन्म का कारण है
- ✓ मसीह की देह में बपतिस्मा देता है
- ✓ सर्वदा के लिये छाप लगाता है
- ✓ हमारी देह में बास करता है

गहराई से खोजना

1 कुरिन्थियों 6:11 के अनुसार पवित्र आत्मा क्या है?————

————————————

प्रेरित 5:3—4 भी देखें

इसके विषय में सोचें

इफिसियों 1:14 ये कहता है कि पवित्र आत्मा स्वयं गारन्टी है या हमारे उद्धार की कीमत।

ये सत्य आपको कैसा महसूस कराता है?

————————————

————————————

————————————

मेरा प्रति उत्तर

ये जानते हुए कि मेरी देह परमेश्वर की आत्मा का मन्दिर है, हम अपनी देह की कैसी देखभाल करें? देखें 1 कुरिन्थियों 6:19—20।

————————————

————————————

————————————

————————————

इस सप्ताह

अपनी गवाही बांटो (बताएं) (आपने कैसे मसीह को जाना) एक व्यक्ति के साथ

हो सकता है ये व्यक्ति वो हो जिनके लिये आप प्रार्थना कर रहे हों।

गहराई से खोजना

पढ़ें यहूदा 20 पवित्र आत्मा में प्रार्थना करना क्या है? मतलब? देखो प्रश्न 8।

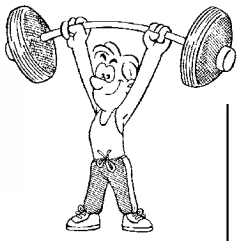

मज़बूती से बढ़ना

पढ़ें प्रेरित 8–14
(दिन में एक अध्याय)

स्मरण पदः 1 कुरिन्थियों 12:13

"क्योंकि हम सबने क्या यहूदी हो या यूनानी क्या दास क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया"।

पवित्र आत्मा का कार्य जारी रखना

6. यीशु ने आत्मिक ज्ञान के लिये क्या वायदा किया, यूहन्ना 14:26 के अनुसार?——————————————————————

——————————————————————

किस आनन्द को जानना है कि स्वयं मसीह की आत्मा हमें सिखाती है।

7. पवित्र आत्मा हमें करीब से जानता है, वह विश्वासी के लिये और क्या दूसरा करता है – रोमियों 8:26–27 के अनुसार? ——————

——————————————————————

8. रोमियों 8:14 कहता है कि पवित्र आत्मा मसीही की अगुवाई करता है पवित्र आत्मा के द्वारा अगुवाई किये जाने के लिये मसीही को चाहिये किः

इफिसियों 5:18 ——————————————————

गलातियों 5:16 ——————————————————

पवित्र आत्मा से भरने के लिये या आत्मा में चलने के लिये का मतलब कि मसीही उसके द्वारा नियंत्रित और अगुवाई किया जाता है ये फलों के द्वारा प्रगट किया जाता है जिसका वर्णन गलातियों 5:22–23 में किया गया है।

मैं कैसे पवित्र आत्मा द्वारा भरा जा सकता हूं?

- ✓ जब आप ये पहचानते हो कि आपने पाप किया है, परमेश्वर के सामने अंगीकार करें, पाप को बढ़ने ना दें (1 यूहन्ना 1:9)। इसके अतिरिक्त ये जरूरी है कि विश्वास के द्वारा क्षमा स्वीकार करें जो परमेश्वर आपको प्रदान करता है।
- ✓ अपने आप को परमेश्वर को दें, उसे आपके जीवन को नियंत्रित करने की अनुमति दो, उसकी इच्छा में समर्पित हो (रोमियों 6:13) पिछले पाठ के अन्त की प्रार्थना दुहराओ।
- ✓ विश्वास के द्वारा सही पवित्र आत्मा की भरपूरी लो, वो ये है विश्वास करें कि वह आपको नियंत्रित करता है उस विश्वास के अनुसार कार्य करता और जीना आरम्भ करें।

विश्वासी में पवित्र आत्मा के कार्य का सारांश

वह विश्वासी को सिखाता है

वह विश्वासी के लिए गिड़गिड़ाता है

वह विश्वासी की अगुवाई करता है

वह विश्वासी को भरता है

वह मसीह की महिमा करता है (यूहन्ना 16:13–14)

चरण 6

परमेश्वर मुझ से बातें करते हैं

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)

—— लगभग समस्त बाइबल दैवीय मूल की है।
—— हर व्यक्ति जो परमेश्वर की सहायता मांगता है वह बाइबल को समझने योग्य है।
—— बाइबल से महानतम लाभ उठाने के लिये उस पर मनन करना महत्वपूर्ण है।

बाइबल क्या है?

1. 2 तीमुथियुस 3:16 बाइबल के मूलरूप के बारे में क्या कहता है? ——

   ————————————————————————————

   शब्द "प्रेरणा" कुछ अनुवादक इसे "परमेश्वर की स्वांस" वास्तव में मानते हैं। ये हमें परमेश्वर के वचन के बारे में क्या बताती है?

   ————————————————————————————

   पद कहता है ———————— धर्मशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा है। यदि ऐसा है तो क्या उसमें कुछ त्रुटि/गलतियां हो सकती हैं? ————

2. किस प्रकार बाइबल दूसरी पुस्तकों से भिन्न है? इब्रानियों 4:12 ——

   ————————————————————————————

3. वर्णन करें कि बाइबल किस प्रकार आपके जीवन में तलवार की तरह काम करती है (इब्रानियों 4:12) ————————————————

   ————————————————————————————

बाइबल का अभिप्राय

4. बाइबल आपको आत्मिक भोजन देती है, बाइबल की तुलना किस से की गई है? (1 पतरस 2:2)? ————————————————

   एक मसीही का क्या होगा जो बाइबल पढ़ने से तिरस्कार करता है?

   ————————————————————————————

5. बाइबल आपको आपके प्रतिदिन के जीवन में अगुवाई करती है। बाइबल की तुलना भजन 119:105 में किससे की जाती है? ————————

   ————————————————————————————

   दीपक को किसलिये इस्तेमाल किया जाता है? ————————————

   ————————————————————————————

हम गड़बड़ी के युग में जीते हैं। बहुत से "शिक्षक" हैं, कलीसियाएं और मित्र हैं जो हमें सलाह देना चाहते हैं। हम कैसे जानते हैं कि कौन सच है? परमेश्वर ने इसी अभिप्राय के लिये हमें बाइबल दी है, हमारे दिमागों को प्रज्वलित करने और हमें सलाहों के जो वे हमें देते मूल्यांकन करने में सहायता करती है।

6. बाइबल आपकी सहायता करती कि आप पाप ना करें (भजन 119:11)। "क्या मैंने आपके वचन को अपने हृदय में छिपा रखा है" मतलब?

   ————————————————————————————

   ————————————————————————————

इस सप्ताह

हर पाठ में जो बाइबल पढ़ना दिया गया है आप किस प्रकार कर रहे हो?

क्या आप एक अध्याय हर दिन पढ़ रहे हो?

हाँ ☐ नहीं ☐

जब बाइबल पढ़ते हो, क्या आपने देखा कि उसकी सामर्थ आपके हृदय को छूती है या आपके जीवन को बदल दिया?

हाँ ☐ नहीं ☐

किसी को बतायें कि जो आप बाइबल पढ़ने में सीख रहे हैं।

यदि अभी तक आपने लगातार अपनी बाइबल नहीं पढ़ी है, तो क्यों नहीं आज ही शुरु करें?

परमेश्वर की सहायता से मैं अपनी बाइबल पढ़ने को समर्पित करता/करती हूं (सुझाव एक दिन में एक अध्याय)

तारीख : ————————————

क्रमानुसार पुराने नियम की पहली 14 पुस्तकें याद करें:

उत्पत्ति
निर्गमन
लैव्यव्यवस्था
गिनती
व्यवस्थाविवरण
यहोशू
न्यायियों
रूत
1 और 2 शमूएल
1 और 2 राजा
1 और 2 इतिहास

धर्मशास्त्र पर मनन

यहोशू 1:8 हमें आज्ञा देता है कि रात–दिन बाइबल पर मनन करें, वो पूरे समय है।

हम नीचे दिये गये लगातार मनन के मतलब का सुझाव देते हैं:

आपके प्रतिदिन की बाइबल पढ़ने से अपने 3 × 5 कार्ड पर कॉपी करें या नोट बुक में लिखं। अपने पर्स में लेकर चलें या दिखने वाली जगह पर टेप से चिपका दें (जैसे शीशे पर या फ्रिज पर) जिससे आप अक्सर दिन के दौरान दुहरा सकें।

जब आप अपने पद पर मनन करें तो अपने आप से पूछें:

- ✓ परमेश्वर मुझे क्या सिखाना चाहता है?
- ✓ इस हिस्से को मैं अपने जीवन में आज किस प्रकार व्यवहार में ला सकता हूँ?

इसके बारे में सोचें

क्या बाइबल आपके जीवन की अन्तिम अधिकारी है? पढ़ें प्रेरित 17:10–11

बीरिया के मसीहियों (विश्वासियों) के कैसे रीति–रिवाज़ ये जो पालन करने के योग्य थे?

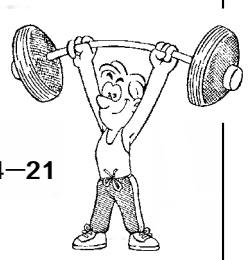

मज़बूती से बढ़ना

पढ़ें प्रेरित 14–21 (दिन में एक अध्याय)

2 तीमुथियुस 3:16–17 स्मरण करें

"हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाये"।

7. बाइबल आपको मसीही जीवन में बढ़ने में सहायता करती है।
   2 तीमुथियुस 3:16–17 के अनुसार, बाइबल के लिये उपयोगी है:

   ———————————— ,————————————

   ———————————— ,————————————

   वो जो अपने आपको बाइबल के अनुसार अगुवाई करने देता है तो पूर्णरूप से भले कार्यों के लिये सुसज्जित होता है"। उन से सावधान रहें जो ये कहते हैं कि बाइबल काफी नहीं हैं और आपको प्रोत्साहित करते हैं कि स्वप्न और प्रकाशन बाइबल के अतिरिक्त खोजें। बाइबल काफी है।

8. क्या कभी कभी समय पर आपका विश्वास करना कठिन है? पढ़ें रोमियों 10:17 और उत्तर दें:

   विश्वास हमारे पास कैसे आता है? ————————————

   हम अपने विश्वास को कैसे बढ़ा सकते हैं? ————————————

बाइबल की विषय सूची बाइबल दो भागों में हैं

पुराना नियम	**नया नियम**
39 पुस्तकें	27 पुस्तकें
व्यवस्था (उत्पत्ति से व्यवस्था–विवरण)	यीशु का जीवन (4 सुसमाचार)
इस्राएल का इतिहास: (यहोशू से ऐस्तर तक)	चर्च का बढ़ना (प्रेरित)
काव्य: (अय्यूब से श्रेष्ठगीत)	शिक्षा (पत्रियां)
भविष्यवाणी: (यशायाह से मलाकी)	भविष्यवाणी (प्रकाशितवाक्य)

बाइबल से अत्याधिक कैसे प्राप्त करें

सुनें : कलीसिया के साथ संगति जहाँ परमेश्वर का वचन विश्वासयोग्यता से सिखाया जाता है।
प्रकाशितवाक्य 1:3; इब्रानियों 10:24–25

अध्ययन : क्या आप अपनी बाइबल रोज पढ़ते हैं? नोटबुक में नोट लिखें जो आप प्रतिदिन को पढ़ने में सीख रहे हैं (देखें परिशिष्ट 4) अच्छा स्थान आरम्भ करने का यूहन्ना, प्रेरित, 1 यूहन्ना और रोमियों हैं।

मनन : देखें "धर्मशास्त्र पर मनन" बगल के नोट में बॉक्स में देखें।
नोट: बहुत से धर्म और समूह व्यवहारिक तरीके का मनन करते हैं वे पूरी तरह अपने दिमाग को खाली करने का प्रयास करते हैं, एक शब्द दुहराते या मुहावरे का बेहोशी या मूर्छा की दशा तक लाते हैं या अपने को आत्मिक अगुवाई में दिखाते हैं, ये बाइबल आधारित मनन नहीं हैं, ये शकुन विचार का हिस्सा है, टोना और मूर्तिपूजा है जिससे परमेश्वर घृणा करता है देखें व्यवस्थाविवरण 18:9–13 बाइबल आधारित मनन में सोचना और परमेश्वर के वचन के बारे में बोलना होता है।

स्मरण करें : हर पाठ में स्मरण पद दिया गया है, कार्य पूरा करना बहुत महत्वपूर्ण है, एक बार जो पद याद कर लिया तो वह आपके दिमाग में भविष्य में प्रयोग करने के लिये हैं।

आज्ञा मानना : याकूब 1:22 का मुख्य विचार अपने शब्दों में लिखो ————————————

एज्रा ने धर्मशास्त्र के साथ क्या किया? एज्रा 7:10 तीन बातें लिखें :

1. ————————————
2. ————————————
3. ————————————

चरण 7

परमेश्वर से बातें करना

उत्तर सच (स) झूठ या (झू)
—— प्रार्थना करने के लिये ये महत्वपूर्ण है कि ये चर्च में की जाये और घुटनों पर।
—— मैं भरोसे से प्रार्थना कर सकता हूँ क्योंकि परमेश्वर मेरी सुनता है और उत्तर देने का वायदा करता है।
—— जब मैं खाना खाता या सोने के पहले प्रार्थना करना काफी है।

प्रार्थना क्या है?

प्रार्थना परमेश्वर से बातें करना है। ये उतनी ही आसान है और स्वाभाविक जैसा एक मित्र से बातें करना। आप किसी भी विषयमय या जरूरत पर भरोसे के साथ परमेश्वर से बातें कर सकते हैं। प्रार्थना उसके साथ करीबी वार्तालाप है।

1. परमेश्वर यिर्मयाह 33:3 में क्या महान प्रस्ताव देता है? ——————————

————————————————————————————————

प्रार्थना का मतलब ईमानदारी से जो आपके दिल में है अपने मित्र को बताता है जो बड़ी रूचि से आपकी सुनता है।

परमेश्वर कैसे आपकी प्रार्थना का उत्तर देने का वायदा करता है? ———

————————————————————————————————

क्या कोई समय है कि परमेश्वर आपकी पुकार सुनने को बहुत व्यस्त है? हाँ ☐ नहीं ☐

2. प्रार्थना तरीकों में से एक है जिसमें हम अपने को बचाते हैं, वो कौन सी सलाह है जो यीशु अपने चेलों को देते हैं कि वे परीक्षा में ना गिर जायें?

मत्ती 26:41——————————————————————————

3. जब हम प्रार्थना करते तो कौन से खतरों से दूर रहना है?

मत्ती 6:5 ——————————————————————————

मत्ती 6:7 ——————————————————————————

इस कहावत का आपके पास क्या अनुवाद है "व्यर्थ बक बक करना" (अन्य जातियों की तरह बहुत बक–बक करना)?

————————————————————————————————

हमें कैसे प्रार्थना करना चाहिये?

4. भजन हमें परमेश्वर की प्रशंसा के लिये बहुत कारण देता है, उदाहरण के लिये भजन 106:1 परमेश्वर की प्रशंसा का क्या कारण देता है?

————————————————————————————————

5. हमेशा चिन्ता करने की अपेक्षा आपको क्या करना चाहिये? फिलिप्पियों 4:6

————————————————————————————————

इस पर विचार करें

इब्रानियों 4:16 के अनुसार हमें परमेश्वर के पास किस व्यवहार के साथ आना चाहिये?

——————————————

——————————————

जब हमारी इच्छा होती तो हमें प्रार्थना करना चाहिये, क्योंकि ऐसे मूल्यवान समय की बरबादी करना पाप है। हमें उस समय भी प्रार्थना करना चाहिये जब हमारी इच्छा भी ना हो, क्योंकि इस प्रकार की अस्वस्थ दशा में रहना खतरनाक है।

चार्ल्स एच. स्पर्जन

इस सप्ताह

इन पुराने नियम की पुस्तकों को क्रमबद्ध तरीके से नाम ब नाम याद करो और पहले याद किये पुस्तकों को दुहराओ।

एज्रा
नहेम्मियाह
ऐस्तर
अय्यूब
भजन
नीतिवचन
सभोपदेशक
श्रेष्ठगीत
यशायाह
यिर्मयाह
विलापगीत

इस सप्ताह

1 तीमुथियुस 2:1 हमें ये आज्ञा देता है कि "प्रार्थना, निवेदन, और विनती और धन्यवाद हर एक के लिये किये जायें"।

क्या आपके पास प्रार्थना, विनती की कोई सूची है जो आपको स्मरण दिलाती है कि आपको किस के लिये प्रार्थना करनी है?

एक कागज पर प्रार्थना की सूची बताओ या नोट बुक में।

आपकी सूची में नीचे दिये शामिल होना चाहियेः

- ✓ परिवार के सदस्य
- ✓ मित्रगण
- ✓ विश्वास में भाई और बहनें
- ✓ परमेश्वर के सेवक (आपके पास्टर आदि)
- ✓ लोग जो आपके देश पर शासन करते और समुदाय
- ✓ लोग जिन्हें आप मसीह के लिये जीवन चाहते हो
- ✓ आपके लक्ष्य और व्यक्तिगत बढ़ौतरी

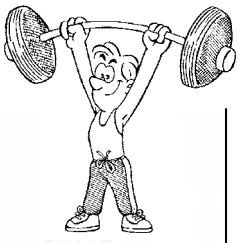

मजबूती से बढ़ना

पढ़ें प्रेरित 22–28 (दिन में एक अध्याय)

फिलिप्पियों 4:6–7 स्मरण करें

"किसी भी बात की चिन्ता मत करो, पुस्तक हर एक बात में तुम्हारे निवेदन प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सन्मुख उपस्थित किये जायें। तब परमेश्वर की शान्ति जो समझ से बिल्कुल परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी"।

6. फिलिप्पियों 4:6 के अनुसार जब हम परमेश्वर से कुछ मांगते तो हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? ————————————————

   जब हम "धन्यवाद" के साथ प्रार्थना करते हैं हम परमेश्वर में विश्वास का अनुभव करते हैं जो वो हमारी विनती पर हमें देगा।

   इसीलिये पद 7 कहता है कि हम———————————— का अनुभव अपने हृदयों में कर सकते हैं, अपने बोझ को उन हाथों में छोड़ते हैं जो पूरी तरह से हमारी समस्याओं में हमारी सहायता करने योग्य है।

7. "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो" का क्या मतलब है? (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)
   ————————————————————————————————

   यदि आपको सब समय प्रार्थना करना है तो क्या इसका मतलब है कि आप किसी भी स्थान में प्रार्थना कर सकते हैं उदाहरण के लिये आपके कार्य स्थल पर, बस पर चढ़ते समय आदि? ————————————————

आपकी प्रार्थना में ये शामिल होना चाहिये

स्तुति प्रशंसा – परमेश्वर के लिये कि वह कौन है।

अंगीकार – आपके पापों का जिससे वे आपकी परमेश्वर के साथ की संगति में रूकावट न डालें।

विनती – आपकी व्यक्तिगत जरूरतें और दूसरों की मध्यस्ता के लिये।

धन्यवाद देना – जो परमेश्वर ने आपके लिये किया है नाशुक्रगुजार ना रहें, अपने आभार उस पर प्रकट करें।

8. यूहन्ना 14:13 के अनुसार हमें ———————— नाम में प्रार्थना करना चाहिये?

9. और हम क्या सीख सकते हैं कि नीचे दिये हिस्सों से कैसे प्रार्थना कर सकते हैं?

   भजन 66:18 ————————————————————————

   1 यूहन्ना 5:14–15 ————————————————————————

   मत्ती 21:22 ————————————————————————

10. इफिसियों 3:20 आपके विश्वास को किस प्रकार प्रोत्साहित करता है?

    ————————————————————————————————

    ————————————————————————————————

परमेश्वर आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं

हमने देखा है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर के लिये वायदा करता है पर कैसे? किसी ने कहा है कि परमेश्वर के उत्तर देने के तीन तरीके हैं:–

- ✓ कभी कभी वह हाँ! कहता है,
- ✓ और भी समय है परमेश्वर हमारी भलाई के लिये वह "नहीं" कहता है,
- ✓ दूसरे समयों में वह कहता है "थोड़ा इन्तजार करो"।

चरण 8

प्रतिदिन परमेश्वर से भेंट करना

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)

—— हर दिन प्रार्थना करना और बाइबल पढ़ना महत्वपूर्ण है।

—— प्रतिदिन एक को बाइबल के बहुत से अध्याय पढ़ना चाहिये।

—— दिन प्रतिदिन परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमारा परिवर्तन करना चाहता है।

मनन/भक्ति का समय क्या है?

भक्ति का समय प्रतिदिन परमेश्वर के साथ नियुक्ति है। ये हर रोज होना चाहिये क्योंकि उसके साथ सम्बन्ध बनाने मैं समय लगता है। परिपक्वता "एकदम" नहीं आती बल्कि ये दिन प्रतिदिन पैदा की जाती है, एक समय में एक कदम।

"प्रति सुबह हे प्रभु, आप मेरी आवाज सुनते हैं हर सुबह मैं अपनी जरूरत आपके सामने रखता हूं और आशा में बाट जोहता हूँ"। भजन 5:3

कुछ लोग इसे "खामोशी का समय" कहते हैं, क्योंकि ये वो समय है जो परमेश्वर के सामने ठहरना है जिससे वह हमसे अपने वचन के अनुसार बात करेगा और तब प्रार्थना में उत्तर दें।

ये महत्वपूर्ण है

प्रतिदिन भक्ति/मनन का समय होना क्यों महत्वपूर्ण है?

यहोशू 1:8 ————————————————————

भजन 63:1 ————————————————————

मत्ती 4:4 ————————————————————

क्या आप कहेंगे कि परमेश्वर के साथ नियुक्ति जरूरी है या केवल एक अच्छा विचार है (यदि आपके पास समय है)? ————————————

————————————————————

आपको कब और कहाँ मनन करना चाहिये?

साधारणतः सबसे अच्छा समय सुबह का है। ये हमें परमेश्वर के साथ दिन आरम्भ करने देता है। पुरुष जैसे दाऊद और मसीह ने सुबह का समय अलग कर रखा था (भजन 5:1 और मरकुस 1:35)। स्पष्ट है ये बताता है कि हमें आमतौर की अपेक्षा जल्दी उठना होगा, पर ये प्रयास करना उपयोगी होगा। कुछ लोग शाम का समय अलग करते हैं (भजन 63:6) या दिन में दूसरा समय जो वे जानते हैं कि वे परमेश्वर के साथ अपनी नियुक्ति रख सकते हैं।
जो भी समय आप चुनें, शान्तिपूर्ण जगह देखें जहां आप बिना दखल के समय बिता सकते हैं। कभी कभी ये गुप्त स्थान ढूंढ़ने में तो ये जरूरी होगा कि दूसरों से पहले जल्दी उठें, कि अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर सकें या बाहर जा सकें।

अब आप अपने मनन के लिये समय और स्थान निर्धारित कर लें:
समय : ———— मैं इस समय उठूंगा : ———— स्थान : ————

इस पर विचार करें

इब्रानियों 4:12 बाइबल "दोधारी तलवार" से तुलना करती है।

कभी कभी हमारे लिये पढ़ना असुविधाजनक होता है, क्योंकि ये हमारे जीवनों को छेदती है, हमें ये दिखाने के लिये कि हम कैसे हैं और हमें क्या सही करना है।

क्या आपने कभी परमेश्वर को धन्यवाद दिया है धर्मशास्त्र को ऐसा करने की योग्यता के लिये?

इस सप्ताह

पुराने नियम की पुस्तकों को क्रमबद्ध तरीके से नाम याद करें और पहले याद किये पुस्तकों को दुहराएं।

होशे
योएल
आमोस
ओबद्याह
योना
मीका
नहूम
हबक्कूक
सपन्याह
हाग्गै
जकर्याह
मलाकी

बाइबल पढ़ने की रूपरेखा

हम आपको नये नियम से पढ़ने की शुरुआत का सुझाव देते हैं। हर दिन एक पुस्तक पढ़ें जब तक आप समाप्त ना कर लें।

आप नीचे दिये गये क्रमानुसार बाइबल की पुस्तकों को पढ़ें:

- यूहन्ना
- प्रेरित
- 1 यूहन्ना
- रोमियों
- याकूब
- फिलिप्पियों

परिशिष्ट न. 5 पूरे वर्ष के पढ़ने की सूची देती है

नोटः जब आप एक पुस्तक पढ़ना समाप्त कर लें दूसरी शुरु करने के पहले भजन और नीतिवचन के एक एक अध्याय पढ़ने का प्रयास करें।

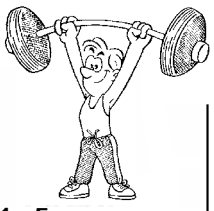

मजबूती से बढ़ना

पढ़ें 1 यूहन्ना 1–5,

भजन 1–5
(दिन में एक अध्याय)

यहोशू 1:8 स्मरण करें

"व्यवस्था की ये पुस्तक तेरे चित्त से कभी ना उतरने पाये इसी में दिन रात ध्यान किये रहना इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करें। क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे और तू प्रभावशाली होगा"।

परिशिष्ट 4
कैसे आप अपना मनन का समय रखें इसका सारांश है।

पृष्ठ काट कर अपनी बाइबल में चिपकायें, ये आपका मार्गदर्शन करने में सहायता करेगी, परमेश्वर के साथ राज नियुक्ति में लाभ पहुंचायेगी।

अपने मनन के समय में आपको क्या शामिल करना चाहिये

अपने हृदय को तैयार करें:

आपको परमेश्वर के सामने किस रूझान के साथ प्रस्तुत करना है?

भजन 139:23–24 ——————————————————

भजन 119:18 ——————————————————

भजन 5:3 ——————————————————

इब्रानियों 4:16 ——————————————————

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें

यूहन्ना 5:39 में हम देखते हैं कि यहूदी अगुवे धर्मशास्त्रों में खोज रहे थे। प्रेरित 17:11 में बीरिया के लोग धर्मशास्त्र में उन्हें जांचते रहे और भजनकार कहता है, *"क्योंकि मैं तेरे उपदेशों की सुधि रखता हूं . . . और तेरी चितौनियों पर ध्यान रखता हूं"* (भजन 119:94,95)। इसमें खाली पढ़ना शामिल नहीं है पर हिस्से का अध्ययन करना भी है कि इसके मतलब की खोज की जा सके और ये देखना कि परमेश्वर आपको क्या बताना चाहते हैं।

आरम्भ में छोटा हिस्सा लें (एक अध्ययन से अधिक न लें) कभी कभी ये बेहतर होता है कि छोटे हिस्से को कई बार पढ़ें – बहुत से अध्यायों को पढ़ने के बदले। इस प्रकार आप अच्छी तरह आंकलन कर सकेंगे।

बाइबल अध्ययन कैसे करें

हिस्सा : ——————————————

इस हिस्से से सबसे अधिक किसने असर डाला? ——————————
——————————————————————
——————————————————————
——————————————————————

इस हिस्से का मुख्य आशय क्या है? ——————————
——————————————————————
——————————————————————
——————————————————————

इसका आपके जीवन में क्या मतलब है? ——————————
——————————————————————
——————————————————————

नीचे दिये हुए प्रश्न आपको हिस्से से अधिक जानने में सहायता करेंगे:–

क्या कोई आज्ञा मानने की है?
क्या कोई *नमूना* पालन करने को है?
क्या कोई पाप को दूर करना है,
क्या आपको अपना वायदा करना है?

✍ अपने मनन के समय इस्तेमाल करने के लिये एक नोटबुक रखें। अपनी बाइबल अध्ययन के लिये बॉक्स में दिया हुआ तरीका इस्तेमाल करो। अपने विचारों को नोटबुक में लिखें।

व्यवहारिक सुझाव

1. जो समय आपको मनन के लिये जरूरी है निकालें, जल्दबाजी ना करें।
2. प्रतिदिन परमेश्वर के साथ नियुक्ति को प्राथमिकता दें – कोशिश करें कि भेंट अवश्य हो। यदि एक दिन नहीं होता तो निराश न हों पर दूसरा दिन ना छोड़ें।
3. एक दिन में एक ही अध्याय पढ़ने का प्रयास करें। समय समय पर अच्छा अध्ययन करने के लिये बेहतर है थोड़ा पढ़ें – कभी आपको अधिक भी पढ़ना पड़ सकता है।
4. बाद में देखने के लिये अपने बाइबल पदों पर निशान लगायें या लाइन खींचें।
5. मुख्य पद को बेहतर समझने के लिय अपने ही शब्दों में रखें।
6. यदि ध्यान लगाना कठिन है, या पढ़ना या जोर से प्रार्थना करना या खड़ें होकर प्रार्थना करना। ये बेहतर होगा कि पलंग पर लेट कर मनन ना करें – आप सो सकते हैं? ध्यान लगाने के लिये परमेश्वर से सामर्थ मांगें।
7. बाइबल अध्ययन, प्रार्थना का उत्तर आदि लिखने के लिये एक नोट–बुक जरूर रखें।

प्रार्थना करना

बाइबल के अध्ययन किये हिस्से का संदर्भ देते हुए प्रार्थना करें। परमेश्वर को उत्तर दें। उसे उस हिस्से पर अपनी प्रतिक्रिया बतायें शामिले करें:–

- ✓ अंगीकार, जब आप अपने जीवन की सभी अशुद्धताओं को जान लें तब मान लें।
- ✓ आराधना करें कि परमेश्वर कौन है (भजन आपकी सहायता प्रशंसा में सहायता कर सकता है)।
- ✓ परमेश्वर जो करता है उसकी प्रशंसा करें।
- ✓ जो परमेश्वर ने दिया उसका धन्यवाद करें।
- ✓ अपनी प्रार्थना सूची की विनतियों के लिये प्रार्थना करें।

प्रभु के लिये गाओ

संगीत आपकी आत्मा को उठाता है और आराधना के वातावरण बनाने में मदद करता है। पूरे दिन लगातार गीत और कोरस गाते रहें, केवल अपने मनन समय ही नहीं। इफिसियों 5:9 यदि चाहो तो कोरस गुनगुनाओ या सीटी बजाओ।

जो आपने सीखा है व्यवहार में लाओ

जो हिस्सा आपने पढ़ा है एक कागज़ पर उसकी कॉपी करो या नोट बुक में कि दिन में मनन कर सको। स्मरण करने का प्रयास करें इस प्रकार परमेश्वर आपकी सहायता पाप का सामना करने में कर सकेगा।

अवलोकन : आपके मनन के समय के लिये साधारण रूपरेखा

1. **अपने हृदय तैयार करो**
   - ✓ अपने आप को जांचो
   - ✓ अपने पाप मान लो
   - ✓ समझ मांगो

2. **बाइबल अध्ययन करो**
   - ✓ किसने सबसे अधिक प्रभावित किया?
   - ✓ मुख्य विचार क्या है?
   - ✓ आपके लिये इसका अर्थ क्या है?
3. **प्रभु से प्रार्थना करो**
   - ✓ जो हिस्सा सीखा है उसके विषय में परमेश्वर से बातें करो।
   - ✓ परमेश्वर की आराधना करो कि वह कौन है।
   - ✓ जो कुछ परमेश्वर ने किया है उसके लिये उसे धन्यवाद दो।
   - ✓ अपनी विनती की सूची को इस्तेमाल कर परमेश्वर से मांगो
4. **प्रभु के लिये गाओ**

   एक कोरस या गीत गाओ। संगीत आपकी आत्मा को उठायेगा और परमेश्वर की प्रशंसा करने में मदद करेगा।
5. **जो आपने सीखा है लागू करें**

   आज आप अपने जीवन में व्यवहारिक करने के लिये क्या करेंगें?
6. **मनन और स्मरण करें**

   जो हिस्सा आप पढ़ते हैं, एक पद चुनें जिस पर आप मनन कर सकते और उसे स्मरण करें नोटबुक में इसे लिखें या 3 गुणा 5 कार्ड पर जिसे आप दिन के समय ले जा सकें।

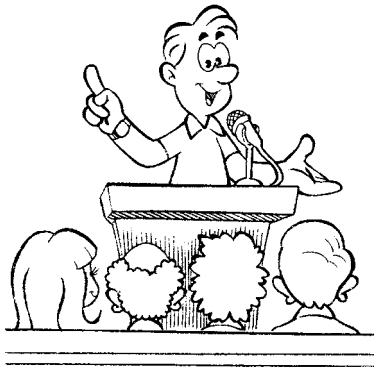

चरण 9
मेरी कलीसिया

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)
—— चर्च केवल एक इमारत है।
—— चर्च सभी विश्वासियों का समुदाय है।
—— मुझे चर्च (कलीसिया) की जरूरत नहीं, जब तक मैं घर पर अपनी बाइबल पढ़ता हूँ या रोड़ियों या टी.वी. पर मसीही कार्यक्रम देखता/सुनता हूँ।

चर्च (कलीसिया) क्या है?

प्रभु यीशु ने मत्ती 16:18 में कहा, " . . . मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा" मसीह ने भविष्यकाल के विषय में बोला (मैं बनाऊंगा) और कलीसिया के विषय में बोला ये कुछ कि ये उसकी है (मेरी कलीसिया) ये कलीसिया जिसे मसीह बनाने वाला था आज वह पहले ही से उसका अस्तित्व है और लगातार बढ़ती है। ये आज संसार में मसीह की दिखने वाला प्रगटीकरण है।

एक भाव में कलीसिया विश्वव्यापी है, पर उसी समय इसकी स्थानीय उपस्थिति भी है (मत्ती 16:18, प्रेरित 13:1)।

विश्व–व्यापी कलीसिया

विश्व व्यापी कलीसिया अलौकिक देह है जिसका सिर मसीह है। ये सब लोगों से मिलकर बनी है जो पेन्तिकोस्त के दिन से कलीसिया के उठायें जाने तक नया जन्म पाये हुए हैं।

1. कलीसिया की तुलना किससे की जाती है? 1 कुरिन्थियों 12:27 ————
———————————————————————————
2. ये देह कौन बनाता है? (कलीसिया) कलीसिया मसीह में सभी विश्वासियों द्वारा बनाई जाती है वे जो परमेश्वर की आत्मा से पुनः जन्म पा गये हैं (1 कुरिन्थियों 12:13)
3. परमेश्वर ने कलीसिया के सदस्यों को क्या दिया है? रोमियों 12:4–8 —
———————————————————————————
4. कलीसिया का सिर कौन है? इफिसियों 4:15 ————————————
———————————————————————————
5. इफिसियों 1:12 के अनुसार कलीसिया का अस्तित्व क्यों है? ————
———————————————————————————
6. कलीसिया का मिशन क्या है? मत्ती 28:18–20 ——————————
———————————————————————————

स्थानीय कलीसिया

स्थानीय कलीसिया उन लोगों का झुण्ड हैं जिनका नया जन्म हो गया है, बपतिस्मा हुआ है और इस प्रकार आयोजित किया है कि वे परमेश्वर की महिमा करें, एक दूसरे को बढ़ायें और सुसमाचार का प्रचार करें।

इस सप्ताह

अपनी कलीसिया के भाई – बहनों के साथ गहरी संगति करना, इस सप्ताह का आरम्भ उनमें से एक को नियंत्रित अपने घर करने से करें या बाहर भोज साथ करने से।

इसके विषय में सोचें

परमेश्वर ने हर विश्वासी को एक आत्मिक वरदान दिया है। रोमियों 12, इफिसियों 4:11 और 1 कुरिन्थियों 12 इन वरदानों के बारे में बताते हैं। उदाहरण के लिये कुछ वरदानों का वर्णन किया गया है :

सेवा	शिक्षा देना
बढ़ाना	देना
विश्वास	सुसमाचार
बुद्धि	प्रचार करना
दया दिखाना	चरवाही करना
अगुवाई (प्रशासन)	

क्या आप जानते हैं कि आपके क्या वरदान हैं? यदि उत्तर "नहीं" है तब आप प्रार्थना के द्वारा पता लगा सकते हैं, कलीसिया में सेवा करके और मसीह में भाई बहनों से पूछकर कि वे क्या योग्यता आप में देखते हैं।

इसके बारे में सोचो

विश्वासियों के उन बहानों की एक सूचि बनाओ जो वे चर्च ना आने के लिये बनाते हैं (इकट्ठा होने के लिये)।

____

____

____

____

____

उनके अनुपस्थिति होने का असली कारण? इब्रानियों 10:25

____

____

____

इस सप्ताह

अपने चर्च के अगुवों की एक सूची बनाओ, इस सप्ताह हर रोज प्रार्थना उनमें से एक के लिये करो।

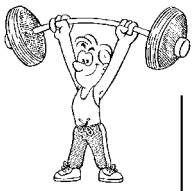

मजबूती से बढ़ना

पढ़ें रोमियों 1–4 (बेहतर समझने के लिए हर अध्याय को दो दिन में पढ़ें)

स्मरण करें–इब्रानियों 10:24–25

"प्रेम और भले कार्यों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें। और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें जैसे कि कितनों की रीति पर है पर एक दूसरे को समझाते रहें और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक ये किया करो"।

7. इब्रानियों 10:24–25 पढ़ो, क्या बाइबल ये सिखाती है कि मसीह में विश्वासी को स्थानीय कलीसिया का हिस्सा होना चाहिये?
हाँ ☐ नहीं ☐ क्यों? ___________________________________
____

हम एक दूसरे को "प्रेम और भले कामों" के लिये कैसे उस्का सकते हैं?

____

8. यरूशलेम की कलीसिया में विश्वासी ने और क्या दूसरों के साथ किया? प्रेरित 2:42 ____
____

9. यदि आप कलीसिया का हिस्सा हैं, आपको उसकी सहायता करनी चाहिये। आप किस प्रकार अपनी कलीसिया की मदद कर सकते हैं?

गलातियों 6:1–2 ___________________________________

गलातियों 6:10 ____________________________________

1 पतरस 4:10 _____________________________________

2 कुरिन्थियों 9:7 __________________________________

> 1 तीमुथियुस 3:1–7 और तीतुस 1:5–9 में बाइबल अगुवों की जरूरतें रखती है। इन हिस्सों को पढ़ें, यद्यपि आप एक अगुवा बनने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। फिर भी हर एक मसीही को जो इन पदों में वर्णन की गई है प्रेरणा लेनी चाहिये।

10. जबकि अगुवों को कलीसिया में परमेश्वर द्वारा रखा गया था हमारा उनके प्रति कैसा रवैया होना चाहिये?

1 थिस्सलुनीकियों 5:12–13 ____________________________

इब्रानियों 13:17 ___________________________________

11. कलीसिया की अपने सदस्यों के प्रति जिम्मेवारियों में से एक क्या है? गलातियों 6:1–2 के अनुसार ___________________________
____

12. एक भटके हुए भाई को सही करने के लिये आपका व्यवहार कैसा होना चाहिये? पद 1,2 ____________________________________
____

कलीसिया, जबकि ये एक परिवार है तो इसकी जिम्मेवारी है कि उसके लोगों की भलाई/कल्याण को देखती रहे। ऐसा समय है जब अनुशासन गवाही को बचाने तथा कलीसिया की शुद्धता के लिए आवश्यक है। ये प्रेम का एक कार्य है और कलीसिया के लोगों के प्रति चिन्तित है। अनुशासन एक चीज़ है परमेश्वर इस्तेमाल करता है एक दूसरे को प्रेम और भले कामों के लिये उस्काने के लिये"।

चरण 10
गवाही देना

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)
—— दूसरों को सुसमाचार प्रचार करना, महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिकतर लोग नरक के रास्ते पर हैं।
—— मैं अपने परिवार और मित्रों को सफलतापूर्वक सुसमाचार प्रचार कर सकता हूँ।
—— अपने विश्वास को बताने योग्य मुझे गवाही देने के पाठ्यक्रम प्राप्त करने के लिये इन्तजार करना होगा।

विश्वासी का एक सौभाग्य है कि मसीह में अपने विश्वास के बारे में गवाही दें या सुसमाचार प्रचार करें, मतलब कि दूसरे व्यक्ति के साथ उद्धार की योजना को बताये जिससे वे मसीह को स्वीकार कर सकें।

गवाही की आवश्यकता

जैसा हमने प्रथम पाठ में देखा कि मानवता पाप के शिकंजे में फंस गई।

"खोई भी धर्मी नहीं एक भी नहीं . . . सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं (रोमियों 3:10,23)।

1. मत्ती 7:13–14 दो दरवाजों के बारे में बोलता है वो जीवन की दो मार्गों को बताते हैं। इन पदों के अनुसार अधिकतर कौन सा मार्ग लोगों का इन्तजार कर रहा हैं?——————————————————

2. यूहन्ना 3:18 उन लोगों के विषय में क्या कहता है, जिन्होंने मसीह पर विश्वास नहीं किया? ——————————————————
——————————————————

3. तुलना में विश्वासी ——————————————————
(2 कुरिन्थियों 5:17) ——————————————————

हमें विशेष मिशन दिया गया है

4. परमेश्वर ने हमें अपना राजदूत नियुक्त किया है, वो मिशन क्या है जो परमेश्वर ने हमें सौंपा है, 2 कुरिन्थियों 5:20 के अनुसार?——————
——————————————————

5. पढ़ें मत्ती 5:14–16 साथ ही यीशु हमें राजदूत बुलाता है (पद 14) ———
——————————————————

6. "हम जगत की ज्योति हैं" ये कहना आपके लिये क्या मतलब है? ———
——————————————————
——————————————————

7. विरोधाभास में आपकी ज्योति की टोकरी या बर्तन के नीचे रखने का क्या मतलब है? पद 15 ——————————————————
——————————————————

इसके विषय में सोचो

क्या दूसरों को मसीह के बारे में बताना आपको परेशान करता है? यदि हां तो पढ़ें रोमियों 1:16

पौलुस क्यों सुसमाचार से नहीं लजाता?

——————————
——————————
——————————

इस सप्ताह

सुसमाचार सुनाने के लिये आप किसको जिम्मेवार सोचते हैं?
नीचे उसका नाम लिखो :

परिवार सदस्य :

——————————
——————————
——————————

मित्र और जान पहचान वाले

——————————
——————————
——————————

उनके लिये लगातार प्रार्थना करें और उनसे मसीह के बारे में बात करें।

स्मरण करना

क्या आप असुरक्षित महसूस करते हैं, इसलिये कि आप नहीं जानते कि क्या कहें उनसे जिनको आप गवाही देना चाहते हो? ये महसूस करना बहुत आम है, और अधिक भरोसा पाने के लिये।

1. परिशिष्ट 6 में "उद्धार की योजना" का अध्ययन करें।
2. योजना को याद कर लीजिये, बाइबल पदों के साथ।
3. परिशिष्ट से पेपर काट लीजिये जो उद्धार की योजना को बताता है और अपनी बाइबल में चिपका लें।

इस सप्ताह

आप गवाही देना कब आरम्भ कर सकते हैं?

अपनी सूची में से एक व्यक्ति के साथ योजना को बांटें और समय बीतने का इन्तजार ना करें, यदि आपके पास योजना नहीं है तो स्मरण कर लें, आपको यूहन्ना 3:16 बांटना चाहिये।

यदि आप जानना चाहते हैं कि किस प्रकार प्रभावशाली रूप से गवाही देना है तो परिशिष्ट नं. 6 आपको व्यवहारिक सुझाव देती है, आपको दूसरों को बताने में सहायता करती है कि मसीह ने आपके जीवन में क्या किया है।

मजबूती से बढ़ना

पढ़ें रोमियों 5–8
(बेहतर समझने के लिए हर अध्याय को दो दिन में पढ़ें)

स्मरण करें:

परिशिष्ट 6 से उद्धार की योजना सीखें

8. आपकी ज्योति कितनी चमकती है? समझ लें कि आप जगत की ज्योति हैं, वर्णन पर चिन्ह लगायें जो सबसे अधिक आपके जीवन के विषय में बताता है।
   - ☐ मैं मसीह के बारे में बोलना पसन्द करता हूं, इसलिये कि उसने मुझे बदल दिया है।
   - ☐ कभी कभी मैं चमकता हूं पर कभी कभी मेरी ज्योति ढंकी होती है।
   - ☐ मैं नहीं जानता कि किस प्रकार मसीह के बारे में गवाही दूं।
   - ☐ मैं मसीह के बारे में बात करने से घबराता हूँ।
   - ☐ अभी तक मेरी ज्योति बहुत कम चमकती है।

9. मत्ती 28:19–20 में वह है जो महान आज्ञा कहलाती है। इस महान आज्ञा में, मसीह हमें क्या करने की आज्ञा देता है?

   _____

   _____

गवाही कैसे दें : व्यवहारिक सुझाव

1. मसीह को आपके जीवन को बदलने दें, याद रखें कि आपके शब्द की उपयोगिता बहुत थोड़ी होगी यदि वे आपके व्यवहार द्वारा सहारा नहीं देते। मत्ती 5:16
2. बाइबल इस्तेमाल करें, ये परमेश्वर का वचन है, ये शक्तिशाली हथियार है जो पापी के दिमाग की गड़बड़ी स्पष्ट कर देता है। इब्रानियों 4:12
3. अपनी गवाही में पवित्र आत्मा की सहायता पर निर्भर हों, वह संसार को उनके पापों से कायल करता है, सुनने को तैयार करता है जब आप उद्धार की योजना प्रस्तुत करते हो। (यूहन्ना 16:8) आप किसी पर दबाव नहीं डाल सकते। स्वयं परमेश्वर ही उनके हृदयों में काम करेगा।
4. अपने मित्रों के लिये लगातार प्रार्थना करो जिन्होंने मसीह को ग्रहण नहीं किया है, उनसे बताने के लिये अवसर की खोज में रहो।
5. अविश्वासियों पर तरस के साथ देखो, ये समझते हुए कि वे पाप के दास के रूप में जी रहे हैं। अविश्वासी आपके दुश्मन नहीं हैं पर वे शत्रु (शैतान) के शिकार हैं।
6. नम्रता के व्यवहार से गवाही दो (1 पतरस 3:15) समझ लो कि यदि वे परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा नहीं होते, तो आप भी उसी दशा में होते।
7. सुसभ्य बने रहें, ये निश्चय करें कि अविश्वासी महसूस करता है कि आप वास्तव में उसकी सहायता करना चाहते हो। दोष ना लगाओ।
8. स्वाभाविक रहें, सबसे अच्छे सम्पर्क आपका परिवार और आपके मित्र हैं, उनसे बताने में ना डरें, इन अवसरों का लाभ उठायें।
9. कुछ अच्छे ट्रैक (परचे) लें और अभी उन्हें बांटना आरम्भ करें। इन्हें पाने के लिये अपने पास्टर या कलीसिया के अगुवों से पूछें।
10. साहसी बनें भले ही हर कोई आपके सन्देश को स्वीकार नहीं करता, स्मरण करें कि आप शुभ संदेश के धारक हैं जो अनन्त जीवन लाता है (रोमियों 1:16) इससे अधिक क्या है कि जो हम सोचते हैं उससे अधिक लोग वचन के प्रति खुले हुए हैं।

चरण 11

बपतिस्मा और प्रभु भोज

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)

—— स्वर्ग में जाने के लिये मुझे बपतिस्मा लेना चाहिये।

—— बपतिस्मा और प्रभु भोज मुझे और पवित्र बनाते हैं।

—— प्रभु भोज की सामग्री, मसीह की देह और खून का चिन्ह है।

बपतिस्मा

1. पिता के पास स्वर्ग जाने से पहले यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी कि सारे जगत के लोगों को चेला बनाओ – मत्ती 28:19–20 के अनुसार। जब कोई मसीह का चेला बन जाता है तो उन्हें प्रथम कदम क्या उठाना चाहिए?

   ———————————————————————

   बपतिस्मा वैकल्पिक नहीं है बल्कि ये हर एक विश्वासी द्वारा आज्ञा का पालन किया जाना चहिये।

2. बपतिस्मा उद्धार के लिये आवश्यक नहीं है पर ये पहले से उद्धार पाये जाने का नतीजा है। आइये, हम प्रेरित 16 में फिलिप्पियों के जेलर के मामले को देखें।

   उद्धार पाने के लिये किसकी आवश्यकता थी? प्रेरित 16:30–31

   ———————————————————————

   जेलर और उसके परिवार ने किस प्रकार अपने विश्वास की गवाही दी? प्रेरित 16:32–33 ————————————————————

   ये नोट करें कि पद 35 संकेत देता है कि ना केवल जेलर ने पर पूरे परिवार ने विश्वास किया।

   हम देखते हैं कि बपतिस्मा इस तथ्य को बताने के लिये सार्वजनिक गवाही देने का एक तरीका है कि हमारा उद्धार हो गया है।

3. प्रेरित 2:41 के अनुसार वचन (सुसमाचार) ग्रहण करने के बाद उनका–

   ———————————————— और लगभग 3 हजार आत्माएं (लोग) उस गिनती में———————————— थे।

   ये 3 हजार लोग बपतिस्मा के द्वारा अपने आप को यरूशलेम की कलीसिया में मिलने की पहचान कर **उसी तरीके से हम अपने स्थानीय कलीसिया के साथ जब बपतिस्मा दिया जाता तो अपनी पहचान कराते हैं।**

कुछ लोगों ने बपतिस्में के विचार को गलत समझ लिया इसीलिये ये जानना बहुत महत्वपूर्ण है:–

1. बपतिस्मा हमारा उद्धार नहीं करता।
2. ना ही ये उद्धार के प्रति कोई कदम है।
3. बपतिस्मा हमें पवित्र नहीं बनाता, पर यद्यपि ये हमें पवित्रता में रहने की प्रेरणा देता है।

गहराई से खोजना

पढ़ें रोमियों 6:1–4। पहली नज़र में लगता है कि ये हिस्सा पानी के बपतिस्में के बारे में बोलता है, फिर भी यहाँ शब्द "बपतिस्मा" वास्तव में इस्तेमाल हमारी मसीह के साथ की पहचान के बारे में बोलता है।

जब हम मसीह को ग्रहण करते हैं हम उसके साथ उसकी मृत्यु में, गाड़े जाने और जी उठने में पहचान करते हैं तो हम मसीह में नये लोग हैं।

पानी का बपतिस्मा इसे परिवर्तन का चिन्ह देता है ये हमारे उद्धार के क्षण में होता है।

पानी के अन्दर जाना हमारी पहचान मसीह के साथ उसकी मृत्यु में करने का चिन्ह है और गाड़े जाने में कि हम अपनी पुराने जीवन पर जाते हैं। ऊपर आना (पानी से) ये पुनरुत्थान का चिन्ह है यानी हमारा नया जीवन।

निर्णय करें

यदि आपने पहले ही मसीह को ग्रहण कर लिया है तो क्या आपने बपतिस्मा द्वारा आज्ञा पालन किया है?

हाँ ☐ नहीं ☐

यदि आपका बपतिस्मा नहीं हुआ है। तो पास्टर से बात करें या आज अपने कलीसिया के अगुवों से बात करें।

स्मरण करना

इब्रानियों 10:10–12 के अनुसार कितनी बार मसीह ने अपनी देह को पाप के बलिदान होने के लिए दिया?

——————————

——————————

इस हिस्से की पेचीदगी के बारे में उनके लिये सोचो जो ये कहते हैं कि रोटी और दाखरस वास्तव में मसीह की देह और रक्त से बन जाते हैं।

यदि ऐसा था तो इसका मतलब ये नहीं होगा कि मसीह का बलिदान सप्ताह दर सप्ताह दुहराया जाता है।

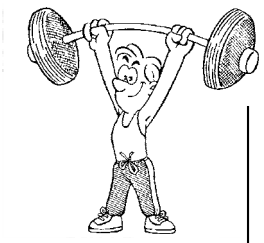

मजबूती से बढ़ना

पढ़ें याकूब 1–5; भजन 19 और 27 (दिन में एक अध्याय)।

स्मरण करें:

मत्ती 28:19

"इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो"।

प्रभु भोज

प्रभु भोज (सहभागिता के लिये) की रस्म प्रभु यीशु मसीह के द्वारा स्थापित उस रात में की गई जब वह पकड़वाया गया था। ये बहुत विशेष और पवित्र है, पर ये अनुष्ठान या कुछ जादुई नहीं हैं।

4. कृपाकर पढ़ें 1 कुरिन्थियों 11:23–26, पद 26 के अनुसार

   हम क्या प्रचार करते हैं?——————————————

   कब तक? ——————————————

   ये हिस्सा हमें प्रभु भोज के मतलब को सिखाता है। ये हमें मसीह के बलिदान जो उसने हमारे लिये क्रूस पर दिया, उसे याद दिलाते हैं और ये भी उसके पुनः आगमन का स्मरण कराते हैं।

5. इसका क्या मतलब है, "मेरी याद में इसे किया करो"? ——————

   ——————————————————————

6. पद 24 और 25 के अनुसार प्याला और रोटी किसका चिन्ह बताते हैं?

   रोटी ——————————————

   प्याला ——————————————

7. अब आप पढ़ें 1 कुरिन्थियों 11:27–31। पद 28 कहता है कि इसमें हिस्सा लेने क पहले, हर कोई को अपने आप को जांच लेना चाहिये। इस कार्य से आपके लिये क्या अर्थ है?

   ——————————————————————

   ——————————————————————

8. 1 कुरिन्थियों 10:16–17 प्रभु भोज के दूसरा अर्थ की विवेचना करता है जो एक सहभागिता, आपस में बांटना या संगति दूसरे विश्वासियों से संगति रखने का क्या अर्थ है?

   ——————————————————————

   ——————————————————————

कुछ लोगों ने प्रभु भोज के अर्थ को गलत समझ लिया है, इसलिये, ये जानना महत्वपूर्ण है:–

1. ये संस्कार या कुछ जादुई नहीं है।
2. ये हमें पवित्र नहीं बनाता यद्यपि ये हमें पवित्र होने की प्रेरणा देता है।
3. ये रस मसीह के रक्त में नहीं बदल जाता ना ही रोटी मसीह की देह बन जाती है बल्कि ये रक्त का और देह का चिन्ह बताते हैं, हमें यह मसीह के बलिदान को जब तक वह दुबारा ना आये याद दिलाता है।
4. यह आज्ञाकारिता का एक कार्य है और मसीह के साथ संगति करने का क्षण है साथ ही जो भाई और बहन विश्वास में हैं।

चरण 12
परिवार

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)

—— पति की प्रथम जिम्मेवारी अपनी पत्नी से प्रेम करने की।

—— पत्नी का आदरणीय चरित्र उसके पति को मसीह के लिये जीत सकता है।

—— भले ही एक के माता–पिता विश्वासी नहीं है, उनका सम्मान हमेशा करना चाहिये।

मसीही परिवार

मसीही परिवार सुरक्षा, सहारा और आपसी बढ़ाने का केन्द्र है। घर के द्वारा भौतिक आवश्यकताएं पूरी होती हैं और बच्चों को सिखाया जाता है कि जीवन के मामलों को किस प्रकार सामना किया जाता है इसके विपरीत यदि मसीह घर पर राज्य नहीं कर रहा है एक क्षमार्थी बनने से दूर ये लड़ाई का मैदान बन जाता है और व्याकुलता का एक स्थान बन जाता है।

अवलोकन : आपके मनन के समय के लिये साधारण रूपरेखा

"मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं, मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाये"।

- ✓ ये परमेश्वर था जिसने हव्वा को बनाया, आदम की पत्नी की तरह तो हर को बनाने का विचार परमेश्वर द्वारा आया।
- ✓ पत्नी को मेल खाने वाले सहायक बताया गया है, पति के लिये सही। दोनों पति और पत्नी आपस में एक दूसरे के पूरक हैं, एक साथ, जब वे अलग अलग थे उसकी अपेक्षा वे अब बेहतर हैं।
- ✓ इस कारण पुरुष अपने माता–पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे। और पुरुष और उसकी पत्नी नंगे थे पर लजात नहीं थे" (उत्पत्ति 2:24–25)।
- ✓ दम्पत्ति को अपने माता–पिता से स्वतंत्र होने की आवश्यकता है कि वे अपना अलग परिवार बना सकें। यही एक तरीका है कि वे एक दूसरे पर निर्भर होना सीख सकेंगे।
- ✓ "एक तन" एक दूसरे के साथ इक्ट्ठे रहना बताते हैं, मुकाबले में नहीं पर एक अच्छे मित्र की तरह करीबी विचारों को बांटना।
- ✓ विवाह के अन्दर सेक्स करना शर्म का कारण नहीं है, पर ये परमेश्वर द्वारा दम्पत्ति की अच्छाई के लिये वरदान है। बच्चे जो आयेंगे वे परमेश्वर की ओर से आशीष हैं।

घर के परिवेश में आपकी जिम्मेवारियां

1. नीचे दिये गये हिस्से में परमेश्वर पति को क्या आदेश देते हैं?

   – इफिसियों 5:25 ————————————————————

   – कुलुस्सियों 3:19 ————————————————————

   – 1 पतरस 3:7 ————————————————————

पतियो, क्या आप मानते हो कि आप इसे पूरा कर रहे हैं? यदि नहीं तो किस क्षेत्र में आपको बदलना चाहिये? किस प्रकार का प्रेम मसीह का कलीसिया के लिये था? ये प्रेम एक नमूना है कि आप अपनी पत्नी के साथ के सम्बन्ध में उसका अनुसरण करें।

चर्चा करें

बाइबल बताती है कि पत्नी अपने पति के प्रति समर्पित हो। क्या आप विश्वास करते हो कि ये पति को अधिकार देना है कि रौबिला या दबंग हो? क्यों नहीं?

इसके बारे में सोचें

बहुत सी चीज़ें हैं जो घर की एकता में जोखिम पैदा करती हैं। उनमें से कुछ को लिखें :

————————————————

————————————————

इस सप्ताह

परिवार की एकता में जोखिमों में से एक है एक साथ समय बिताने की सबसे निचली प्राथमिकता। भले ही हम उन से प्रेम करते हैं ऐसा समय होता है जब वे हमारे प्रेम को महसूस नहीं करते हैं।

आज आप क्या प्रेम दिखाने के लिये अपने पति की ठोस प्रेम दिखाने का तरीका या पत्नी को तरीका दिखायेंगे? (या परिवार के सदस्य थे)?

————————————————

————————————————

इस सप्ताह आप अपने बच्चों के साथ क्या गतिविधि कर सकते हैं (परिवार के सदस्य जिससे वे आपको प्रेम महसूस करें?

————————————————

————————————————

————————————————

————————————————

गहराई से खोज करना

मसीही परिवार में प्रेम केन्द्रित है। 1 कुरिन्थियों 13 : 4–7। पौलुस सच्चे प्रेम को बताता है। एक अलग शीट पर इस हिस्से के अनुसार प्रेम की विशेषताएं लिखो या उस वचन के नीचे रेखा खींचो जो आपके लिये सबसे अधिक है।

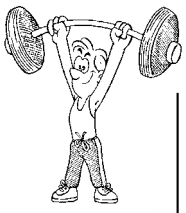

मजबूती से बढ़ना

पढ़ें फिलिप्पियों 1–4; भजन 37,51 और 139 (दिन में एक अध्याय)

स्मरण करें:

फिलिप्पियों 2:3–4

"विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ ना करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं बरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करें"।

2. परमेश्वर "पत्नियों" को क्या आज्ञा देता है?

   इफिसियों 5:33 ————————————————————

   1 पतरस 3:1–2 ————————————————————

3. इफिसियों 6:4 में परमेश्वर माता–पिता से क्या अपेक्षा करता है? (उन्हें क्या नहीं करना चाहिये)————————————————————

   उदाहरण के लिये – माता–पिता क्या करते हैं जिससे बच्चे परेशान या गुस्से के लिये उसकाए जाते हैं? ————————————————————

   ————————————————————

   (उन्हें क्या करना चाहिये) ————————————————————

   ————————————————————

4. व्यवस्थाविवरण 6:6–7 के अनुसार किस परिस्थिति, स्थानों पर आपको बच्चों को निर्देश देना चाहिये? ————————————————————

   ————————————————————

   परिवार की तरह बांटें कि आपने अपने मनन के समय क्या सीखा। हर एक की जरूरत के लिये बाइबल पढ़ें और साथ प्रार्थना करें।

5. इफिसियों 6:1–2 में परमेश्वर बच्चों को क्या आदेश देते हैं?

   ————————————————————

6. कुछ नियम है जो घर में सामंजस्य पैदा करते हैं जो पति, पत्नि और बच्चों पर लागू होते हैं। वे क्या हैं?

   इफिसियों 5:21 ————————————————————

   फिलिप्पियों 2:3–4 ————————————————————

विशेष परिस्थितियाँ

यदि आपका परिवार मसीही नहीं है

1. <u>उनसे प्रेम करें</u> : ये महत्वपूर्ण है कि अपने परिवार के अविश्विासी सदस्यों को नीचा ना देखें। वे पाप करते हैं इसलिये कि वे मसीह को नहीं जानते आप भी ऐसा ही जीवन जिया करते थे। ये याद करें कि "जब हम पापी ही थे मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों 5:8) उन्हें अपना प्रेम ठोस तरह से दिखायें।
2. <u>अपनी अच्छी गवाही के द्वारा उन्हें मसीह के लिये जीतें</u> : *"हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल चलन का देखकर बिना वचन के पति अपनी पत्नी के चाल चलन के द्वारा खिंच जाये" (1 पतरस 3:1–2)।*
   यद्यपि वचन पत्नियों के लिये निर्देश है, वे किसी भी मसीही पर लागू कर सकते हैं जिनके परिवार के सदस्य हैं जिनका उद्धार नहीं हुआ है। जो गवाही आप देते हो वह आपके परिवार के परिवर्तन के लिये है। आलोचना करने के बदले और उन पर दबाव डालने के बदले अपना विश्वास अपने कार्यों के द्वारा दिखायें (मत्ती 5:16)।

यदि आप एक साथ रहते हैं पर विवाहित नहीं हैं

यद्यपि ये हमारे समाज में अविवाहित दम्पत्ति को पाना आम बात है जो एक साथ रहते हैं, बाइबल इसे व्यभिचार कहती है। क्या आप और आपका साथी कानूनी तौर पर विवाहित हैं? यदि नहीं तो जितना जल्दी हो परिस्थिति को ठीक कर लीजिये। अपने पास्टर से सलाह लें या सलाह व सुझाव के लिये चर्च के अगुवे से मिलें।

यदि आप अकेले हैं

अकेले व्यक्ति के लिये चुनौती है कि उच्च स्तर बनाये रखें। कोई भी विवाह के बाहर सेक्स के सम्बन्ध से दूर रहें। अपने आप को भविष्य में अपने पति या पत्नी के लिये शुद्ध रखें। परमेश्वर आपके लिये सबसे उत्तम चाहता है।

यदि आपने आप को शुद्ध नहीं रखा है तो परमेश्वर से अपना पाप मान लो और उससे पवित्रात्मा में जीने के लिये सहायता करें। आप किसी परिपक्व मसीही से या पास्टर से सलाह ले सकते हैं।

30

चरण 13
यीशु के पीछे हो लेना

उत्तर सच (स) या झूठ (झू)

—— एक मसीही को अपने आत्मिक बढ़ौतरी के लिये बहुत कुछ करना होता है।

—— मसीह की देह के साथ संगति महत्वपूर्ण नहीं है।

—— ये सम्भव है कि परमेश्वर के साथ लगातार संगति कर सकें।

आपको बधाई हो

इस अध्ययन "मसीह में नया जीवन" के अन्त में पहुंचने पर आपको बधाई, हो हम आपको प्रोत्साहित करते हैं कि आप इसके **संकलन 2** का भी अध्ययन जारी रखें। ऊपर दिये गये चित्रों में नीचे दिये गये प्रश्नों को देखें:

क्या आप मसीह की नाईं बनने के लक्ष्य तक पहुंचना चाहते हैं? हाँ ☐ नहीं ☐

क्या "मसीह में नया जीवन" के अध्ययन ने उस लक्ष्य तक पहुंचने में आपकी सहायता की? हाँ ☐ नहीं ☐

क्या इस पाठ्यक्रम के अन्त करने का मतलब है कि आप अपने लक्ष्य तक पहुंच गये? हाँ ☐ नहीं ☐

मसीह का सच्चा चेला बनने का मतलब ये नहीं कि इस प्रकार के पाठ्यक्रम को पूरा करना। शिष्यता एक लम्बी दूरी की दौड़ की तरह है बल्कि इसकी अपेक्षा 100 मीटर की दौड़ है। ये प्रतिदिन का चलना है हर रोज एक नई जीवन शैली के साथ।

अपने जीवन को सही क्रमबद्ध करने के लिये मूल आदतें

पिछले पाठों में आपने विशेष कदम मसीह के साथ चलने में स्थापित करने हेत् उठाये हैं।

*मसीही जीवन की **मूल आदतों** की पहचान करें जो इन दिये गये चित्रों से मेल खाते हैं :*

_____ _____ _____ _____

ये आदतें आपके लिये मसीह की नाईं बनने के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। इनका कभी तिरस्कार मत करना . . .

वे आपके जीवन को सही क्रम में लाना महत्वपूर्ण है उस पर समय समर्पित करना जो वास्तव में महत्वपूर्ण है। इसे **प्राथमिकता स्थापित** करना कहा जाता है। इन्हें आपके लिये नई प्राथमिकता बन जाना चाहिये, दूसरी गतिविधियों के ऊपर इन्हें स्थान दें।

_____ _____

यीशु ने मसीही जीवन को चरित्रित करने के लिये 3 बातें बोली : समर्पित हैं :

✓ यीशु मसीह ✓ दूसरे मसीही ✓ संसार में मसीह का कार्य

1. मसीह क्या चाहता कि आपके पास हो?

   यूहन्ना 17:3———————————————— यूहन्ना 17:13 ————————————————

2. यूहन्ना 17:11 ये बयान करता है कि यीशु चाहता है कि मसीही लोग एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखें। आप अपने नाम की सामर्थ से उन्हें सुरक्षा दें जिससे वे ———————————————— जैसे हम एक हैं"।

3. यूहन्ना 17:23 मैं उनमें और तू मुझ में कि ———————————— है जो जाएं और जगत जाने ———— है कि मसीह स्वर्ग से आया कि संसार से प्रेम करें। ये प्रेम और एकता मसीहियों में एक मजबूत गवाही है, जो अविश्वासियों के लिये ये सन्देश की पुख्ता करती है। यूहन्ना 13:34–35।

जाँच

क्या आप पाठ 8 से मनन समय योजना इस्तेमाल कर रहे हो?

हाँ ☐ नहीं ☐

अपने मसीह से मिलने का क्या समय निर्धारित किया है?

मसीह?———————————

आप किस प्रकार दूसरे मसीहियों के साथ सम्बन्ध बनाओगे?

———————————

———————————

———————————

———————————

आप संसार को कैसे दिखाओगे कि मसीह आप में बसता है?

———————————

———————————

———————————

———————————

गहराई से खोज़ करना

पढ़ें यूहन्ना 15:16 यीशु की इच्छा ये है कि उसके अपने बहुत फल लायें और उनका फल बना रहे। दो प्रकार के फल होते हैं। ये फल गलातियों 5:22–23 के अनुसार और मत्ती 28:18–20 के अनुसार क्या हैं।

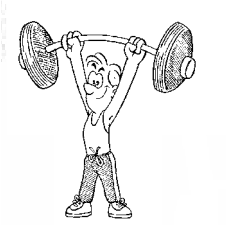

मजबूती से बढ़ना

पढ़ें 1 थिस्स. 1–5 और 2 थिस्स. 1–3 (दिन में एक अध्याय)

नीतिवचन 3:5–6 स्मरण करो

"तू अपनी समझ का सहारा न लेना बरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा"।

विश्वास के द्वारा चलना

4. पौलुस कहता है, "हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से जीवित हैं" (2 कुरिन्थियों 5:7)। इब्रानियों 11:1 में विश्वास किस प्रकार वर्णन किया गया है?———————————————————

5. इब्रानियों 11:6 कहता है, "बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है। वो दो चीज़ें क्या हैं जिन पर हमें परमेश्वर के पास आने से पहले विश्वास करना चाहिये? पद 6

   क ———————————————————

   ख ———————————————————

6. क्षण भर के लिये सोचें, "विश्वास द्वारा चलना" इसका अर्थ क्या है, तब नीचे बॉक्स में विश्वास के लिये कहा गया उस पर मनन करें।

विश्वास केवल अन्धी आशा नहीं है, पर ये निश्चिंतता है कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और जो कुछ उसने प्रतिज्ञा की है उसे पूरा करने वाला है। परमेश्वर पर विश्वास करना अपने किसी भी साधन पर भरोसा नहीं करना है पर परमेश्वर पर ठहरना है।

विश्वास से चलना प्रतिदिन व्यवहार में लाना जो प्रभु आपको सिखा रहा है। इसीलिये इसे बनाये रखना और आपकी करीबी उसके साथ की संगति को बचाये रखना महत्वपूर्ण है।

7. यीशु यूहन्ना 15:4–5 में अपने अनुयायियों के साथ के सम्बन्ध को किस प्रकार वर्णन करते हैं ———————————————————

   ———————————————————

   हमारे मसीह के साथ सम्बन्ध को दाखलता से तुलना किया जाता है, मसीह जब दाखलता है और हम उसकी डालियां हैं।

8. मसीह के साथ इस सम्बन्ध को बनाये रखना क्यों जरूरी हैं? ————

   ———————————————————

9. "मसीह में बने रहना" या "उसमें होना" क्या अर्थ रखता है (पद 4)

   ———————————————————

   ———————————————————

10. यूहन्ना 15:10 के अनुसार हम उसके प्रेम में कैसे बने रह सकते हैं?

    ———————————————————

    ———————————————————

वचन बद्धता

11. मसीह का चेला होने के लिये क्या आवश्यक है? लूका 9:33

    ———————————————————

    ———————————————————

12. क्या आप आनन्दपूर्वक प्रतिदिन के जीवन के लिये मसीह के पीछे चलने और अपनी इच्छाओं को त्यागने को तैयार हैं? हाँ ☐ नहीं ☐

- ✓ जो नमूने और आदतें आपने सीखी हैं उन पर चलना जारी रखें।
- ✓ जो प्रभु आपको हर दिन दिखाता है उन्हें व्यवहार में लाएं।
- ✓ अपने सम्बन्ध परमेश्वर के साथ जो है उसे जोश के साथ देखते रहो।

गलातियों 2:20 चरण 4

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और अब मैं जीवित ना रहा पर मसीह प्रभु में जीवित है, और मैं जो अब शरीर में जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया"।

1 यूहन्ना 1:9 चरण 3

"यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है"।

यूहन्ना 10:27–28 चरण 2

"मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूँ और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं, और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ और वे कभी नाश ना होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा"।

इफिसियों 2:8–9 चरण 1

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारी ओर से नहीं बरन् परमेश्वर का वरदान है। और न कर्मों के कारण ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करें"।

यहोशू 1:8 चरण 8

"व्यवस्था की ये पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाये, इसी में दिन रात ध्यान दिये रहना इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करता क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे और तू प्रभावशाली होगा"।

फिलिप्पियों 4:6–7 चरण 7

"किसी भी बात की चिन्ता मत करो परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सन्मुख उपस्थित किये जायें। तब परमेश्वर की शान्ति जो समझ से बाहर है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी"।

2 तीमुथियुस 3:16–17 चरण 6

"हर एक धर्मशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो"।

1 कुरिन्थियों 12:13 चरण 5

"क्योंकि हम सबने क्या यहूदी हो क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया"।

नीतिवचन 3:5–6 चरण 13

"तू अपनी समझ का सहारा न लेना बरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा"।

फिलिप्पियों 2:3–4 चरण 12

"विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं बरन् दूसरों की हित की भी चिन्ता करें"।

मत्ती 28:19 चरण 10–11

"इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो"।

इब्रानियों 10:24–25 चरण 9

"और प्रेम और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें। और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना ना छोड़ें जैसे कि कितनों की रीति हैं पर एक दूसरे को समझाते रहो और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों त्यों और भी अधिक ये किया करो"।

मैं अपने पापों को कैसे मान लूँ?

"यदि हम दावा करते कि पापरहित हैं
हम अपने आपको धोखा देते हैं
और हममें सत्य नहीं है
यदि हम अपने पापों को मान लें
तो वह हमारे पापों को क्षमा करने में
विश्वासयोग्य है और सब
अधर्म से शुद्ध करने में धर्मी है।"

1 यूहन्ना 1:8–9

मान लेना केवल कहना नहीं है कि "मैंने पाप किया है"
सच्चा अंगीकार में बहुत सी आवश्यकता है:–

- ✓ ईमानदार हो
- ✓ पश्चातापी हो (ये इच्छा कि अब वो पाप नहीं करूंगा)
- ✓ स्पष्ट हो (परमेश्वर की विशेष रूप से बतायें मैंने क्या किया)
- ✓ मेरी गलती को शीघ्रता से मानें, जितने जल्दी मैं ये पहचानता या अहसास करता हूँ कि मैंने पाप किया है, उसे मुझे मान लेना चाहिये। नहीं तो मैं और अधिक पाप में गिरने के खतरे में हूँ।
- ✓ उन लोगों को क्षमा मांगने में जो मेरे पाप के कारण प्रभावित हुए नम्र बनें।
- ✓ क्षमा स्वीकार करें, हमें अपने पापों के लिये अपनी निन्दा जारी नहीं रखना चाहिये जो हमने पहले ही मान लिया है। यदि परमेश्वर ने हमें क्षमा कर दिया है तो हमें उसकी क्षमा स्वीकार करना चाहिये और विश्वास कर उसे धन्यवाद करना चाहिये। शैतान के दोषों को तिरस्कृत करें कि हमें क्षमा नहीं किया जा सकता।

मैं मसीह में क्या हूँ?

मैं एक नई सृष्टि हूँ (2 कुरिन्थियों 5:17)।
मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ (यूहन्ना 1:12, रोमियों 8:14–15, गलातियों 3:26, 4:6)।
मेरा छुटकारा हुआ और मेरे पाप क्षमा किये गये (कुलुस्सियों 1:14)।
मैं सर्वदा के लिये दोष मुक्त हूँ (रोमियों 8:1)।
मुझे पाप के बंधन से छुड़ाया गया (रोमियों 6:1–6)।
मुझे अधिकार है कि बिना शर्म के परमेश्वर के सिंहासन के सामने समय पर उसकी दया पाऊं (इब्रानियों 4:16)।
मैं मसीह में धर्मी हूँ, पूरी तौर से क्षमा किया गया (रोमियों 5:1)।
मैं धार्मिकता का दास हूँ (रोमियों 6:18)।
मैं पवित्र हूँ (इफिसियों 1:1, 1 कुरिन्थियों 1:2, फिलिप्पियों 1:1)।
मैं संसार का नमक हूँ (मत्ती 5:13)।
मैं जगत की ज्योति हूँ, सत्य का ढोने वाला (मत्ती 5:14)।
मैं मसीह का मित्र हूँ (यूहन्ना 15:15)।
मैं मसीह के द्वारा चुना गया कि उसका फल लाऊं (यूहन्ना 15:16)।
मैं परमेश्वर का दास और सेवक बनाया गया (रोमियों 6:22, इफिसियों 3:1, 4:1)।
मैं एक मन्दिर हूँ, पवित्र आत्मा का निवास (1 कुरिन्थियों 3:16, 6:19)।
मुझे दाम देकर खरीदा गया, इसलिये मैं परमेश्वर का हूँ, मैं अपना स्वामी नहीं, मैं मसीह के लिये जीता हूँ (1 कुरिन्थियों 6:19–20, 2 कुरिन्थियों 5:14–15)।
मैं मसीह की देह का सदस्य हूँ (1 कुरिन्थियों 12:27, इफिसियों 5:30)।
मेरा परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप हुआ है, मैं मेल–मिलाप का सेवक हूँ (2 कुरिन्थियों 5:18–19)।
मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, अब मैं जीवित ना रहा, पर मसीह मुझ से जीता है (गलातियों 2:20)।
मैं मसीह के द्वारा इससे पहले कि संसार उत्पन्न हुआ मैं उसके प्रेम में पवित्र और बिना दाग होने के लिये चुना गया हूँ (इफिसियों 1:4)।
मैं परमेश्वर का उत्तराधिकारी हूँ, इसलिये कि मैं उसकी सन्तान हूँ (गलातियों 4:6–7)।
मैं परमेश्वर की कृति, मसीह में नया जन्मा हुआ कि उसका काम करूं (इफिसियों 2:10)।
मैं पवित्र और धर्मी हूँ (इफिसियों 4:24)।
मैं स्वर्ग का नागरिक हूँ (फिलिप्पियों 3:20, इफिसियों 2:6)।
मैं संसार में तीर्थ यात्री हूँ जिसमें मैं अस्थाई रूप से रहता हूँ (1 पतरस 2:11)।
मैं अंधकार की नहीं पर ज्योति की सन्तान हूँ (1 थिस्सलुनीकियों 5:5)।
मुझे शैतान के राज्य से बचाया गया और मसीह के राज्य के लिये बदला गया हूँ (कुलुस्सियों 1:13)।
मैं शैतान का शत्रु हूँ (1 पतरस 5:8)।
मैं परमेश्वर से उत्पन्न हुआ हूं, शैतान को मुझे छूने का अधिकार नहीं है (1 यूहन्ना 5:18)।
मुझ में स्वयं यीशु बास करते हैं (कुलुस्सियों 3:12, 1 थिस्सलुनीकियों 1:4)।
मैंने परमेश्वर से महान प्रतिज्ञाएं प्राप्त की हैं (2 पतरस 1:4)।
जब मसीह लौटेंगे मैं उनके समान होऊंगा (1 यूहन्ना 3:1–2)।
परमेश्वर के अनुग्रह से जो भी हूँ मैं हूँ (1 कुरिन्थियों 15:10)।
("विक्ट्री ओवर डार्कनेस से नील टी. एन्ड्रसन द्वारा लिया गया)

सफलता के बीस "हो सकते हैं"

किसी ने कहा है कि सफलता "कर सकने" और 'नहीं कर सकने' की असफलता में आती है। ये मानकर कि आप मसीही में बढ़ सकते हैं और परिपक्वता ये विश्वास करने कि सफल नहीं हो सकते कि अधिक प्रयास करती है। तो क्यों नहीं विश्वास करें कि आप विश्वास में और आत्मा में चल सकते हैं और आप संसार की परीक्षाओं और शरीर और शैतान का सामना कर सकते हैं, और आप एक मसीही की तरह परिपक्वता में बढ़ सकते हैं। नीचे दिये गये सफलता के बीस "कर सकने" इसे परमेश्वर के वचन से लिया गया है ये आपको नहीं कर सकने के दलदल से ऊपर उठाकर स्वर्गीय स्थानों में मसीह के साथ बैठाता है।

1. मैं क्यों कहूँ कि मैं नहीं कर सकता जबकि बाइबल कहती है कि मैं मसीह के द्वारा सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे सामर्थ देता है (फिलिप्पियों 4:13)।
2. मैं अपनी आवश्यकताओं के बारे में क्यों चिन्ता करूंगा जब मैं जानता हूँ कि परमेश्वर फिलिप्पियों 4:19 के अनुसार अपनी महिमा के भन्डार से मेरी सारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।
3. मैं क्यों डरूं जब बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने हमें भय की आत्मा नहीं दी है पर सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा दी है (2 तीमुथियुस 1:7)?
4. मैं मसीह में जीने के लिये अपने विश्वास की कमी क्यों करूं जबकि परमेश्वर ने मुझे परिणाम के अनुसार विश्वास दिया है (रोमियों 12:3)?
5. मैं कमजोर क्यों होऊं जबकि बाइबल कहती है कि प्रभु मेरे जीवन की सामर्थ है और मैं उस सामर्थ को प्रगट करूंगा। इसलिये कि मैं परमेश्वर को जानता हूँ (भजन 27:1, दानिय्येल 11:32)?
6. मैं शैतान को क्यों अपने जीवन का नियंत्रण करने दूं जबकि जो मुझ में है उससे जो संसार में है महान है (1 यूहन्ना 4:4)।
7. मैं हार को क्यों स्वीकार करूं जबकि बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमेशा विजय में मेरी अगुवाई करता है (2 कुरिन्थियों 2:14)?
8. मैं बुद्धि में क्यों कम होऊं जबकि मसीह परमेश्वर से मेरे लिये ज्ञान बना और परमेश्वर मुझे बहुतायत (उदारता) से बुद्धि देता है जब मैं उससे मांगता हूं, (1 कुरिन्थियों 1:30, याकूब 1:5)।
9. मैं क्या निराश होऊँ, जबकि मेरे पास आशा है और परमेश्वर की प्रेममय दया, तरस और विश्वास योग्यता याद कर सकता हूँ (विलापगीत 3:21–23)।
10. मैं क्यों चिन्ता कर परेशान होऊं जबकि मैं अपनी सारी चिन्ता मसीह पर डाल सकता हूँ जो मेरी चिन्ता करता है (1 पतरस 5:7)।
11. मैं क्यों हमेशा बन्धन में रहूँ ये जानकर कि जहां प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है (गलातियों 5:1)।
12. मैं दोषी क्यों होऊं जबकि बाइबल कहती है कि जो मसीह यीशु में हैं उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं (रोमियों 8:1)।
13. मैं अकेला क्यों महसूस करूं जबकि यीशु ने कहा कि वह हमेशा मेरे साथ है और वह ना कभी मुझे छोड़ेगा ना त्यागेगा" (मत्ती 28:29, इब्रानियों 13:5)?
14. मैं ऐसा क्यों महसूस करूं कि मैं श्रापित हूँ या दुर्भाग्यशाली हूँ जबकि बाइबल कहती है कि मसीह ने मुझे व्यवस्था के श्राप से बचा लिया जिससे मैं विश्वास के द्वारा उसकी आत्मा प्राप्त कर सकूं (गलातियों 3:13–14)।
15. मैं क्यों अप्रसन्न रहूं, जबकि मैं पौलुस की तरह हर परिस्थिति में सन्तुष्ट रहना सीख सकता हूं (फिलिप्पियों 4:11)।
16. मैं अपने आप को अयोग्य क्यों समझूं जबकि मसीह मेरे लिये पाप बन गया जिससे कि मैं परमेश्वर की धार्मिकता बन जाऊं? (2 कुरिन्थियों 5:21)।
17. मैं दूसरों की उपस्थिति में असहाय क्यों महसूस करूं जबकि मैं जानता हूँ कि यदि परमेश्वर मेरे साथ है तो मेरे विरुद्ध कौन हो सकता है? (रोमियों 8:31)
18. मैं व्याकुलता/गड़बड़ी में क्यों रहूं जबकि परमेश्वर शान्ति का रचने वाला है और वह अपने आत्मा के द्वारा जो मुझ में बास करता है उसके द्वारा ज्ञान देता है (1 कुरिन्थियों 2:12, 14:33)?
19. मैं असफल की तरह क्यों महसूस करूँ जबकि मैं विजयी से बढ़कर हूँ, मसीह के द्वारा जो मुझ से प्रेम करता है (रोमियों 8:37)।
20. मैं क्यों जीवन के दबाव को मुझे परेशान करने दूं जबकि मैं साहस ले सकता हूँ, ये जानते हुए कि यीशु ने संसार को और उसकी समस्याओं को जीत लिया है (यूहन्ना 16:33)?

("विक्ट्री ओवर डार्कनेस" से लिया गया द्वारा नील एन्ड्रसन पृष्ठ नं. 114–116)

परिशिष्ट 4

डोटेड लाइन पर काटें, और बीच से मोड़ें। आप अपनी बाइबल में चिपका सकते हैं।

आपके प्रतिदिन के मनन के लिये साधारण योजना

अपने हृदय को तैयार करें
- ✓ अपने आप को जांचें
- ✓ अपने पाप मान लें
- ✓ समझ के लिये मांगें

बाइबल अध्ययन करें
- ✓ आपको सबसे अधिक क्या प्रभावित करता है?
- ✓ मुख्य विचार क्या है?
- ✓ आपके लिये इसका क्या मतलब है?

प्रभु से प्रार्थना करें
- ✓ हिस्सा जिसका अध्ययन किया है उसके बारे में परमेश्वर से बातें करें।
- ✓ परमेश्वर की आराधना करो कि जो वह है।
- ✓ परमेश्वर ने जो किया उसके लिये उसे धन्यवाद दें।
- ✓ अपनी विनती की सूचि इस्तेमाल कर परमेश्वर से मांगें।

प्रभु के लिये गाओ
एक कोरस या गीत गाओ। संगीत आपकी आत्मा को ऊपर उठायेगी और परमेश्वर की प्रशंसा करने में सहायता करेगी।

जो आपने सीखा है उसे अमल में लाएं
आज आप इसे अपने जीवन में व्यवहार में लाने के लिये क्या करेंगे?

मनन करें और स्मरण करें
हिस्से से जो आप पढ़ते हो, एक पद चुनो, उस पर आप मनन कर सकते और स्मरण कर सकते हो।

बाइबल पढ़ने की रूपरेखा

नया नियम पढ़ना आरम्भ करो, दिन में एक अध्याय पढ़ें जब तक आप समाप्त न कर लें। पहले इन पुस्तकों को पढ़ें:

यूहन्ना	फिलिप्पियों
प्रेरित	याकूब
1 यूहन्ना	1 और 2 थिस्सलुनीकियों
रोमियों	इफिसियों

नोटः जब आप एक पुस्तक पढ़ना समाप्त कर लें, दूसरी शुरु करने के पहले कुछ भजन और नीतिवचन का एक अध्याय पढ़ें।

अपने हृदय को तैयार करना

"हे यहोवा भोर की मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूंगा" (भजन 5:3)।

"हे ईश्वर, मुझे जांच कर जान लें, मुझे परख कर मेरी चिन्ताओं को जान ले और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर" (भजन 139:23–24)।

"हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर" (भजन 51:10)।

"हे परमेश्वर मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर" (भजन 51:10)।

"मेरी आंखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं" (भजन 119:18)।

"इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें कि हम पर दया हो और वह अनुग्रह पाये जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करें" (इब्रानियों 4:16)।

बाइबल अध्ययन कैसे करें

हिस्सा : ———————————————————

इस हिस्से से किसने आपको प्रभावित किया———————————

———————————————————————

इस हिस्से का मुख्य विचार क्या है? ——————————————

———————————————————————

आपके जीवन के लिये इसका अर्थ क्या हैं? ——————————

———————————————————————

नीचे दिये गये प्रश्न अपने दिमाग में रखो। ये आपको हिस्से की अधिक जानकारी लेने में सहायता करेगी:–

क्या यहाँ कोई <u>आदेश पालन</u> करने को हैं?
क्या यहां कोई <u>नमूना</u> अनुसरण करने को है?
क्या यहां कोई <u>पाप</u> से दूर रहने को है?
क्या यहां कोई <u>प्रतिज्ञा</u> आपको अपनी बनाने को है?

एक वर्ष के लिये बाइबल पढ़ने की साधारण रूप रेखा

जब आप अध्याय पढ़ते हैं अपनी सूची में अध्याय की गिनती पर "गुणा" का चिन्ह बनायें। इस तरीके से आप अपने पढ़ने की बढ़ौतरी को जान सकोगे।

	अध्याय
यूहन्ना	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21
प्रेरित	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28
1 यूहन्ना	1 2 3 4 5
रोमियों	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
याकूब	1 2 3 4 5
फिलिप्पियों	1 2 3 4
1 थिस्सलुनीकियों	1 2 3 4 5
2 थिस्सलुनीकियों	1 2 3
भजन	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
इफिसियों	1 2 3 4 5 6
कुलुस्सियों	1 2 3 4
भजन	11 12 13 14 15 16 17 18 19 20
मत्ती	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28
भजन	21 22 23 24 25 26 27 28 29 30
1 कुरिन्थियों	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
2 कुरिन्थियों	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
भजन	31 32 33 34 35 36 37 38 39 40
गलातियों	1 2 3 4 5 6
1 तीमुथियुस	1 2 3 4 5 6
2 तीमुथियुस	1 2 3 4
मरकुस	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
भजन	41 42 43 44 45 46 47 48 49 50
तीतुस	1 2 3
फिलोमोन	1
उत्पत्ति	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50
भजन	51 52 53 54 55 56 57 58 59 60
1 पतरस	1 2 3 4 5
2 पतरस	1 2 3
प्रकाशितवाक्य	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
भजन	61 62 63 64 65 66 67 68 69 70
लूका	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24

परिशिष्ट 5

डोटेड लाइन पर काटें, और बीच से मोड़ें। आप अपनी बाइबल में चिपका सकते हैं।

सफलता के बीस "हो सकते हैं"

किसी ने कहा है कि सफलता "कर सकने" और 'नहीं कर सकने' की असफलता में आती है। ये मानकर कि आप मसीही में बढ़ सकते हैं और परिपक्वता ये विश्वास करने कि सफल नहीं हो सकते कि अधिक प्रयास करती है। तो क्यों नहीं विश्वास करें कि आप विश्वास में और आत्मा में चल सकते हैं और आप संसार की परीक्षाओं और शरीर और शैतान का सामना कर सकते हैं, और आप एक मसीही की तरह परिपक्वता में बढ़ सकते हैं। नीचे दिये गये सफलता के बीस "कर सकने" इसे परमेश्वर के वचन से लिया गया है ये आपको नहीं कर सकने के दलदल से ऊपर उठाकर स्वर्गीय स्थानों में मसीह के साथ बैठाता है।

1. मैं क्यों कहूँ कि मैं नहीं कर सकता जबकि बाइबल कहती है कि मैं मसीह के द्वारा सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे सामर्थ देता है (फिलिप्पियों 4:13)।
2. मैं अपनी आवश्यकताओं के बारे में क्यों चिन्ता करूंगा जब मैं जानता हूँ कि परमेश्वर फिलिप्पियों 4:19 के अनुसार अपनी महिमा के भन्डार से मेरी सारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।
3. मैं क्यों डरूं जब बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने हमें भय की आत्मा नहीं दी है पर सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा दी है (2 तीमुथियुस 1:7)?
4. मैं मसीह में जीने के लिये अपने विश्वास की कमी क्यों करूं जबकि परमेश्वर ने मुझे परिणाम के अनुसार विश्वास दिया है (रोमियों 12:3)?
5. मैं कमजोर क्यों होऊं जबकि बाइबल कहती है कि प्रभु मेरे जीवन की सामर्थ है और मैं उस सामर्थ को प्रगट करूंगा। इसलिये कि मैं परमेश्वर को जानता हूँ (भजन 27:1, दानिय्येल 11:32)?
6. मैं शैतान को क्यों अपने जीवन का नियंत्रण करने दूं जबकि जो मुझ में है उससे जो संसार में है महान है (1 यूहन्ना 4:4)।
7. मैं हार को क्यों स्वीकार करूं जबकि बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमेशा विजय में मेरी अगुवाई करता है (2 कुरिन्थियों 2:14)?
8. मैं बुद्धि में क्यों कम होऊं जबकि मसीह परमेश्वर से मेरे लिये ज्ञान बना और परमेश्वर मुझे बहुतायत (उदारता) से बुद्धि देता है जब मैं उससे मांगता हूं, (1 कुरिन्थियों 1:30, याकूब 1:5)।
9. मैं क्या निराश होऊँ, जबकि मेरे पास आशा है और परमेश्वर की प्रेममय दया, तरस और विश्वास योग्यता याद कर सकता हूँ (विलापगीत 3:21–23)।
10. मैं क्यों चिन्ता कर परेशान होऊं जबकि मैं अपनी सारी चिन्ता मसीह पर डाल सकता हूँ जो मेरी चिन्ता करता है (1 पतरस 5:7)।
11. मैं क्यों हमेशा बन्धन में रहूँ ये जानकर कि जहां प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है (गलातियों 5:1)।
12. मैं दोषी क्यों होऊं जबकि बाइबल कहती है कि जो मसीह यीशु में हैं उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं (रोमियों 8:1)।
13. मैं अकेला क्यों महसूस करूं जबकि यीशु ने कहा कि वह हमेशा मेरे साथ है और वह ना कभी मुझे छोड़ेगा ना त्यागेगा" (मत्ती 28:29, इब्रानियों 13:5)?
14. मैं ऐसा क्यों महसूस करूं कि मैं श्रापित हूँ या दुर्भाग्यशाली हूँ जबकि बाइबल कहती है कि मसीह ने मुझे व्यवस्था के श्राप से बचा लिया जिससे मैं विश्वास के द्वारा उसकी आत्मा प्राप्त कर सकूं (गलातियों 3:13–14)।
15. मैं क्यों अप्रसन्न रहूं, जबकि मैं पौलुस की तरह हर परिस्थिति में सन्तुष्ट रहना सीख सकता हूं (फिलिप्पियों 4:11)।
16. मैं अपने आप को अयोग्य क्यों समझूं जबकि मसीह मेरे लिये पाप बन गया जिससे कि मैं परमेश्वर की धार्मिकता बन जाऊं? (2 कुरिन्थियों 5:21)।
17. मैं दूसरों की उपस्थिति में असहाय क्यों महसूस करूं जबकि मैं जानता हूँ कि यदि परमेश्वर मेरे साथ है तो मेरे विरुद्ध कौन हो सकता है? (रोमियों 8:31)
18. मैं व्याकुलता/गड़बड़ी में क्यों रहूं जबकि परमेश्वर शान्ति का रचने वाला है और वह अपने आत्मा के द्वारा जो मुझ में बास करता है उसके द्वारा ज्ञान देता है (1 कुरिन्थियों 2:12, 14:33)?
19. मैं असफल की तरह क्यों महसूस करूँ जबकि मैं विजयी से बढ़कर हूँ, मसीह के द्वारा जो मुझ से प्रेम करता है (रोमियों 8:37)।
20. मैं क्यों जीवन के दबाव को मुझे परेशान करने दूं जबकि मैं साहस ले सकता हूँ, ये जानते हुए कि यीशु ने संसार को और उसकी समस्याओं को जीत लिया है (यूहन्ना 16:33)?

("विक्ट्री ओवर डार्कनेस" से लिया गया द्वारा नील एन्ड्रसन पृष्ठ नं. 114–116)

Certificate

This certificate is presented to

_____

who has satisfactorily completed all the lessons of the course

New Life in Christ Volume 1

Basic Steps of the Christian Life

I have been crucified with Christ and I no longer live,
but Christ lives in me. The life I live in the body,
I live by faith in the Son of God, who loved me
and gave himself for me. *Galatians 2:20*

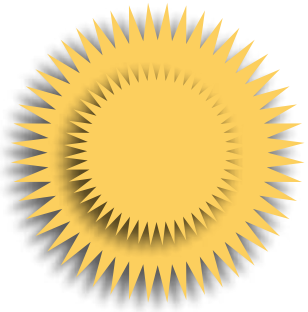

_____ _____

Pastor or Teacher Date